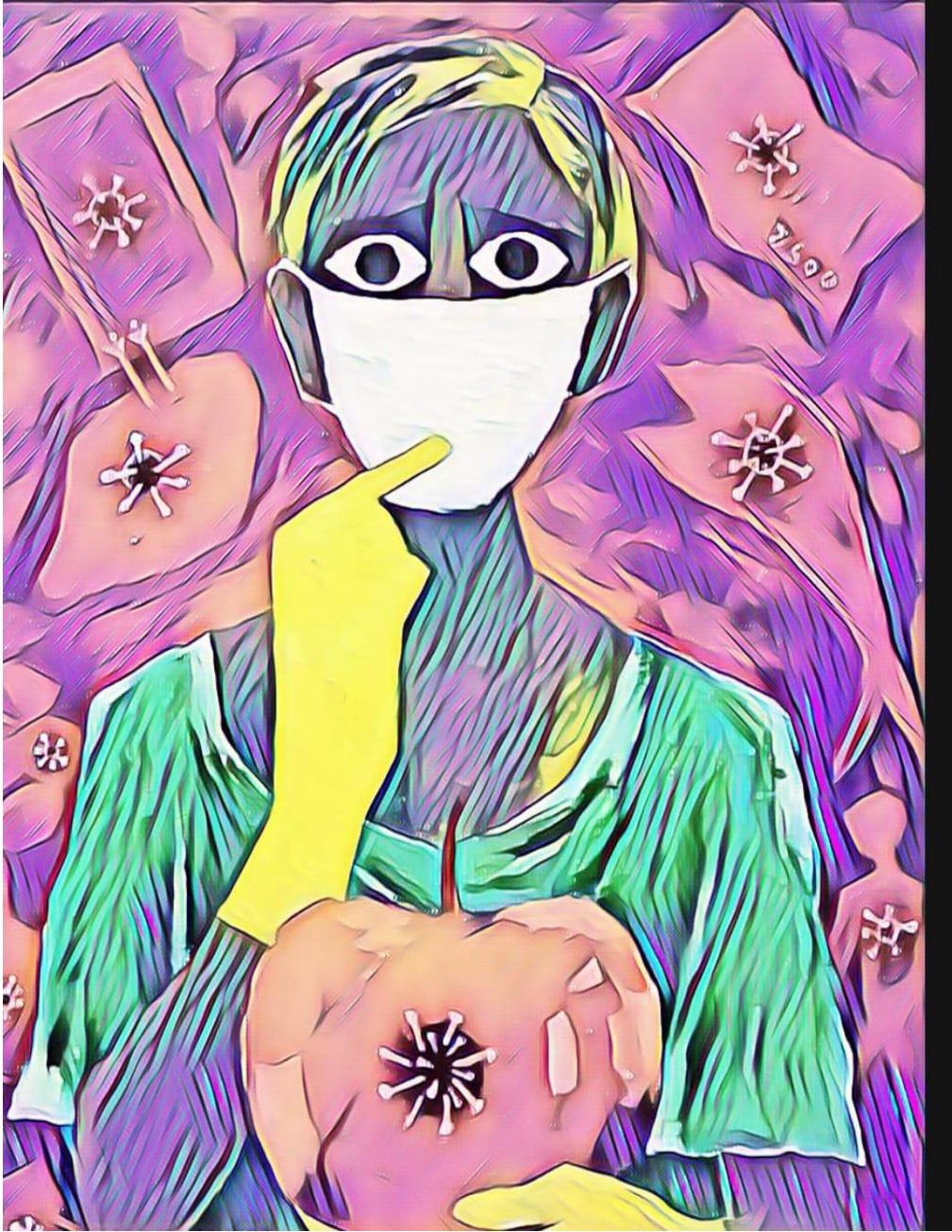




केन्द्रीय विद्यालय संगठन ,राँची संभाग

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, RANCHI REGION



मनोभाव (कोविड-19

वैश्विक महामारी के अनुभव)

**Experiences during
COVID-19 Pandemic**

**E-MAGAZINE ON COVID-19
EXPERIENCE**



“Adaptation” is an important trait/skill/talent given by the God Almighty to all living beings. During the times of natural calamities, the bestowed intelligence in the living beings, invents a strategy for safe survival. During the times of COVID 19, we human beings also found out a strategy to defeat the virus infection. Some practices we followed for the successful prevention of COVID infection are as follows.

- i) Wearing mask and frequent hand washing
- ii) Healthy food habits in order to promote natural body resistance
- iii) Yoga and Pranayama to promote body resistivity/human beings will power
- iv) Avoiding close contact for preventing the spreading of infection and so on.....

While practicing all the above, every one of us, particularly elder people, felt that the society has slowly turned to follow the traditional Indian way of living resembling of “Vedic life”.

When the modern science is researching to invent a suitable medicine or vaccine for the cure of COVID 19, our “Indian Culture” gave a natural remedy to prevent the infection or to recover safely from the COVID infection.

This we could achieve by practicing the living style of earlier era, ie, just before few 100 years ago, such as washing hands & legs before entering in the house, not touching the face or any other object with our hands unnecessarily (this was practiced in the school classroom while the teacher was teaching), keeping distance between human in the social life, eating cooked hot food made in the home kitchen, genuine use of Indian masala’s in the food, Surya Namaskara, Pooja pat, Fasting, wearing traditional dresses and so on, which played a key role in building the body resistance resulting a long healthy life & preventing from virus infections.

Nature silently educates all of us to live as Indian following all the “Traditions” which are embedded in our “Culture”.

P. Balasubramanian
(Assistant Commissioner)



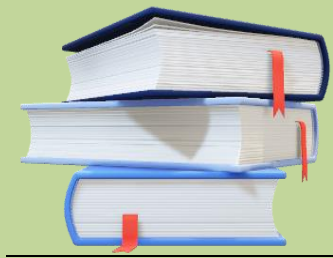
Dear Stakeholders

COVID 19 pandemic intertwined the complexities of human nature. Either it was struggle for survival or saving economy. Confining to home alone could be a punishment for many, same time it was a bliss of ample time for many to groom themselves technologically as well as psychologically. Children have millions of different ways to express themselves. Their vibrant ideas and ecstatic experiences are kaleidoscopically compiled through this endeavour of E-Publication. I hope such an anthology will continue to be our exuberance.

D V Ramakrishna
(Assistant Commissioner)

विषय सूची / Content	रचनाकर/Writer
1 कोरोना डायरी	ईशा मुर्मू
2 मधुमक्खी	उमेश कुमार
3 कोरोना काल के मेरे अनुभव	संतोष कुमार पाण्डेय
4 स्वीच ऑफ	विनीता परमार
5 कुदरत की सीख	हिमनशी नायक
6 कोरोना की कहानी	पूजा कुमारी
7 कोरोना कि कहानी कक्षा पहली के बच्चे की जुबानी	अंशु
8 कोविड-19 को भगाना है	डॉ. लालमणि कुमारी भगत
9 कोरोना और शून्यता	मनोरंजन कुमार
10 कोरोना काल और मैं	कुमार संजीव
11 अपग्रेड	सोनाक्षी गुप्ता
12 ब्लैकबोर्ड से मोबाईल का सफ़र	जयवन्त राज
13 जब से कोरोना आई है	शुभश्री वर्मा
14 प्रकृति की लीला	सीमा नाग
15 कहर कोरोना का	सुरुचि कुमारी
16 बच्चों के चश्मे से कोरोना	विकास आनंद
17 Pandemic and human behaviour	R. C. Gond
18 Online classes	U Jayakumar

19	AN ACT OF CHARITY	Animanand Tigga
20	The Possession	Atul Kumar Singh
21	2020- A year of new learning	Avani Mishra
22	Family is strength	Niraj Kumar
23	An evening in the lockdown	Rishu Rani
24	COVID-19 and Indian Economy	Rahul Kumar
25	COVID-19	Amisha Kumari
26	Today's student- tomorrow's nation builder	Sahdeo Das
27	Quiet and Calm	Anteryami Kumar
28	The Challenges faced and their Solution	Rajni Kumari Verma
29	Zeal to serve humanity amid the pandemic	Rajiv Ranjan
30	Life during Lockdown	Fatima Zohra
31	I am teacher	Pawar Jailal ShivDas
32	Write up on COVID -19	Mukesh Kumar
33	My Experience during COVID-19 Pandemic	Niraj Kumar
34	My Experience	Anshuman Raj



कोरोना डायरी

-ईशा मुर्मू, XII

केवी 3 बोकारो

दिनांक- 25-03-2020

तालाबंदी (लॉक डाउन) का पहला दिन । इसे माननीय प्रधानमंत्री जी ने जनता कर्फ्यू का नाम दिया है। इसे "जनता कर्फ्यू" नाम देने का मकसद था, जनता द्वारा जनता के लिये लगाई हुई। पूरी दुनिया इस वक़्त कोरोना से जूझ रही है, हालांकि भारत में इसका इतना असर नहीं देखा जा रहा था। पर अब काफी सारे मरीजों की देश भर से खबरें आ रही हैं । भारत जैसे ओवर पोपुलटेड देश में तो इसका फैलना और भी जल्दी से हो सकता है।

सरकार ने जो 21 दिन बन्दी का फैसला लिया है, वही एक मात्र चारा है इसके प्रभावों के रोकने का। न जाने कब तक इसका इलाज हो पाने की सुविधा होगी।

दिनांक- 26-03-2020

आज 21 दिन की बन्दी का दूसरा दिन है । गर्मियों के मौसम में एक तो दिन इतना लंबा होता है, और ऊपर से कोरोना का कहर। लॉकडाउन की वजह से सारे विद्यालय, कॉलेजों, आफिस को बंद कर दिया गया है। बस जरूरी संस्थान जैसे पुलिस स्टेशन, अस्पताल, दवाखाना , राशन की दुकान आदि खुली है । बसों, ट्रेन और फ्लाइट्स रद्द कर दी गयी है । मेरे पापा को भी आफिस जाना पड़ता है, क्या कर सकते हैं ? मजबूरी है स्टील प्लांट बंद भी तो नहीं हो सकता है ना। झारखंड में इसका कोई खास असर नहीं दिख रहा है, लोग आराम से सड़कों पर घूम रहे, यहाँ- वहाँ यात्रा कर रहे हैं। आज लॉकडाउन के बारे में सुनकर , लोगों ने राशन दुकान में भीड़ जमा कर रखी थी , वे लोग सारी जरूरत की सामान जमा करके रखना चाहते हैं। पर आज से काफी सख्ती बरती जा रही है । हर रोड, गली ,मोहल्ले में पुलिस का पहरा है, पुलिस किसी को भी बिना वजह के निकलने नहीं दे रही

है, (कुछ लोगो को छोड़कर) बिल्कुल बेखबर थे बाहरी दुनिया से। आज नायक (गाँव के नायक) ने सभा बुलाई है , विषय का पता नहीं है पर लगता है इसी विषय पर चर्चा होगी। देखते हैं गाँव में क्या खास कदम उठाए जाते हैं।

दिनांक- 27-03-2020

इक्कीस दिन के तालाबंद का तीसरा दिन है आज । हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ है , हवा की सनसनाहट के अलावा और कुछ सुनाई नहीं देता। खुशी की बात है गाँव के लोगों को भी वायरस होने का असर है उन्हें भी खौफ है इस बात का।

कल की सभा में कोरोना पर चर्चा हुई ,हमलोग तो ऊपर से ही देख रहे थे। लोगों ने चर्चा में यह सुनिश्चित किया कि लोग एक दूसरे से दूरी बना कर रखेंगे और किसी भी बाहरी आदमी को गाँव में प्रवेश नहीं दिया जाएगा, लेकिन अन्धविश्वास का डेरा रहता है, वो तो होना ही था इसलिए लोगो ने मन्नत मांगने का भी फैसला किया। नायकों ने तय किया वह पूरी गाँव की तरफ से मन्नत मांगेगा , अगर सारे गाँव के लोग सुरक्षित रहते हैं तो इस साल दुर्गा पूजा वह दुर्गा माता को सात बकरों की बलि देंगे। लेकिन सवाल है खुद की जान बचाने के दूसरे की जान लेना कहाँ तक सही है? भगवान तो जानवरों में भी है ना, क्या भगवान एक बच्चे को बचाने के लिए दूसरे बच्चे की जान लेंगे?मुझे कही डर है कि भगवान कहीं हमसे रूठ न जाये।

दिनांक- 28-03-2020

कुछ करने को है नहीं बस टीवी और मोबाइल से समय काट रहे हैं । लगभग हर दिन , सारे दोस्त मेरे घर पर मिल कर बातें किया करते हैं , क्योंकि इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं बचा है । ख्याली पुलाव पकाते रहते हैं, खट्टी- मीठी बातों के तीर चलते रहते हैं। अभी तक तो यह तीर किसी को चुभी नहीं, पर इतनी भीड़ - भाड़ में तो किसी न किसी को के कभी तो चुभ ही जाएगी । वैसे चुभ भी गया तो क्या गम है, हमारे पास हर मर्ज की दवा है । बस एक कोरोना के लिए दवा नहीं है सिवाए घर में कैदियों की तरह रहने के अलावा ।

कल एक संदिग्ध दहरडीह में मिला है। पूछने पर पता चला वह तीन दिन चलकर आया है शायद ओडिशा से। कोरोना का कितना भी कहर हो पर बच्चे खेलना नहीं छोड़ सकते हैं, मैं भी वही बच्ची बन हूँ। ऐसे दिनों में मैं भी हर शाम मनछू

खेलते हैं , इसे "साल्ट टच " भी कह सकते हैं । इसमें विरोधी टीम के "नुंन" को छूना होता है।

दिनांक- 29-03-2020

गुस्सा क्या चीज़ है न , गुस्से में हम क्या- क्या कर जाते हैं। मैं भी कल गुस्से में नुंन छू नहीं खेल पाई। खैर छोड़िये हम तो यहाँ कोरोना पर चर्चा करने आये हैं । कई सारे लोग राज्य के बाहर फसे हुए हैं, कुछ तो पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर का सफर तय कर रहे हैं, घर आने के क्या करे उसके पास कोई चारा नहीं है, सारा काम भी ठप हो चुका है, लोगों के पास इतना पैसा नहीं है जो वो अपना दिन चला सके । सरकार ने कई योजनाएं बनाई पर किसी का असर देखा नहीं जा रहा है , नहीं तो लोग ऐसे सड़क पर नहीं उतर आते। खुशी की बात है झारखंड में अभी तक कोई कोरोना का मामले नहीं आए हैं , पर हमारी यह खुशी कब तक रहेगी कुछ कह नहीं सकते हैं, और चिंता की बात यह है कि लोग अभी भी जिम्मेदारी लेने से पीछे हट रहे हैं । लोगों तक खाना और पानी नहीं पहुँच रहा है, इसका तो यही मतलब है कि कोई न कोई अपनी जिम्मेदारी सही से नहीं निभा रहा है।

दिनांक - 30-03-2020

कल शाम को मैंने अपने माँ को समझाया , उसे ऊपर से ऑर्डर है कि अपने गांव में जितने भी संगठन में गरीब लोग जो बंदी में काम ठप होने के कारण घर नहीं चला पा रहे हैं, इस काम को माँ करने में काफी ढिलाई बरत रही थी, खैर अभी माँ ने सारे काम सही से कर दिए हैं । कुछ 9-10 परिवार सामने आए हैं । बगल वाले टोला में कुछ शराबियों का आतंक है, वे ऐसे समय में भी शराब और जुआ खेलते रहते हैं, मतलब कितने अजीब लोग हैं ना, खुद की नहीं कम से कम अपने परिवार का भी सोचे। आज मैंने टिकटोक वीडियो बनाया पहली बार । इसका भी अपने आप में एक मजेदार अनुभव है।

आज पूरे सात दिन हो गए, न जाने हमें इन सब चीज़ों से मुक्ति कब मिलेगी या हो सकता है कि हमें इस दुनिया से ही मुक्ति मिल जाये ।

दिनांक- 01-04-2020

आज अप्रैल महीना का पहला दिन है और जनता कर्फ्यू का आठवां , हमारे दिन तो खाते पीते ही निकल जाते हैं, पढ़ाई - लिखाई कुछ नहीं हो रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय

ने इसका हल निकाल लिया है , यह हमें "ऑनलाइन क्लासेज " उपलब्ध करवाएंगे । इस मुश्किल की घड़ी में कुछ अच्छा हो रहा है , अब सारी चीज़ें मतलब राइटिंग, डांसिंग, पढ़ाई सब एक साथ करना थोड़ा मुश्किल है ।

दिनांक- 03-04-2020

कोरोना के इस मुश्किल वक़्त में जो झारखंड सरकार और प्रशासन ने जो काम किया है वो काबिले तारीफ है । कोरोना का संकट यहाँ देरी से आया और सरकार पहले से तैयार थी। और इन तैयारियों का निश्चित तौर पर सबको फायदा पहुँच रहा है। जैसा कि पता चला है कि मलेशिया से आई एक महिला कोरोना पॉजिटिव निकली है। प्रशासन उससे जुड़े तमाम लोगों को आइसोलेट कर रही है। सरकार और प्रशासन हमारी सुरक्षा के लिए तमाम प्रयास कर रही हैं, लेकिन आम जनता अपना हित और अहित खुद ही नहीं समझ पा रही है।

दिनांक : 4.04.2020

आज ग्यारहवां दिन और बस दस दिन बचा हुआ है। उसके बाद शायद सबकुछ सामान्य हो जाए। हँसते - बोलते दिन कट जाते हैं, इतना समय है कि दिल खोलकर बातें की जा सकती हैं पर अफ़सोस है



कि कोई बात करने को है नहीं ।

नए जमाने के तकनीक के इस दौर में दूर बैठे अपने दोस्तों से इस तरह से खो से गए हैं कि सामने बैठा व्यक्ति अपना वजूद खो चुका है। सामने वाले की हमने कद्र करना ही छोड़ दिया है। दिल के हाल बयां करना अब हमें सामने बैठे लोगों से ज्यादा फोन पर आसान लगता है। विज्ञान ने अगर नजदीकियां पैदा की है तो फासले भी बढ़ाए हैं।

दिनांक :06.04.2020

अब और आठ लॉक डाउन के बाकी हैं। शायद इसके बाद हमें घर से निकलने की आज़ादी मिल जाए। पर जिस रफ़्तार से कोरोना का संक्रमण बढ़ रहा है लॉक डाउन बढ़ने की संभावना है। मैं थोड़ी बहुत डर भी रही हूँ, लेकिन मुझे इस दुनिया को और भी देखना है, मैं इतना जल्द अंत नहीं चाहती।

मधुमक्खी

-उमेश कुमार
प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय बरकाकाना

कोविड -19 के शुरुआती दिन बड़े कष्टदायक तो अवश्य रहें, लेकिन हमारे जीने के तरीका का फॉर्मेटिंग भी किया। बहुत कुछ सिखाया , बहुत कुछ भुलाया. मार्केट में आवश्यक सामग्री तो उपलब्ध थे किंतु बाहर आना - जाना बहुत मुश्किल था, नहीं जाना ही बुद्धिमानी भी थी। अतः हमें अपने खाने - पीने की चीज़ों को खुद ही ख़्याल रखना था। ख़्याल रखा भी। मैंने खेतों में काम किया है बचपन में। हालाँकि, बहुत ज्यादा नहीं, तथापि इतना तो जानता ही हूँ आलू कैसे लगाए जाता है। हमने फ़रवरी में आलू लगाया था, अप्रैल आते - आते छोटे-छोटे आलू निकल आए। छोटे-छोटे शीशों के गोलियों की भांति मार्बल जैसे। केलों के पेड़ लगाए हुए हैं मेरे घर के पीछे। देखा जाए तो परिभाषा की दृष्टिकोण से इन्हें पेड़ नहीं कहा सकता। पपीता के भी पेड़ थे, अमरुद भी थे। बस ज़िंदा रहने का बहुत साधन मिल गए।

इनके अलावा, जो चीज़ हाथ लगी सबसे शानदार थी। मधु यानी हनी, एक हनी कॉम्ब दिख गई थी, झाड़ियों के बीच वैसे ही जैसे किताब में कभी - कभार पुराने नोट मिल जाते हैं।

पूरे दो महीनों तक हमने अपने खाने की व्यवस्था आस - पास उपलब्ध प्राकृतिक साधनों से की। प्रकृति हमारा पूरा ख़्याल रखती है और हम उसके विपरीत प्रकृति को ही नष्ट करने पर अड़े हैं।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि "अगर सारी मधुमक्खियाँ समाप्त हो जाएँ, तो अगले चार वर्षों में हम सभी समाप्त हो जायेंगे।" समाप्त मतलब दी एन्ड, फिल्मों वाला नहीं, सचमुच का एन्ड, यह पारिस्थितिक (Ecology) का महत्वपूर्ण

पहलू है। चिंता का विषय तो है ही, आदमी पैसा के फेर में पड़ कर जहुआ गया है।

मधुमक्खी के खत्म होने से आदमी कैसे खत्म हो जाएगा ? यह सवाल उतना ही जायज़ है जितना गौ मूत्रपान से कैंसर ठीक करने के दावे पर किया गया प्रश्न।

ज्यादा नहीं भी तो इतना तो जान ही लीजिए कि मधुमक्खी ही परागण (pollination) की क्रिया करती हैं, जिससे कि सरसों, टमाटर, बीन्स, ककड़ी, तरबूज आदि जैसे फल - सब्जियों का उत्पादन होता है। मधुमक्खियों के साथ और व दूसरे एजेंट हैं जो कि परागण हैं मसलन - भंवरा (bumblebee) . माने आपके काम के लिए ये मधुमक्खियाँ ओर भंवरे घूम - घूम कर परागण की प्रक्रिया करवाते हैं और आप इनको खत्म करने पर उतारू हैं। चुकू-मुकु बैठ के सोचिये कि आप , हम और आपके - हमारे इकोलॉजी में कहाँ- कहाँ और कैसे-कैसे डैमेज कर रहे हैं ?



कोरोना काल के मेरे अनुभव

-संतोष कुमार पाण्डेय

स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 बोकारो।

21वीं शताब्दी ने अपनी किशोरावस्था में अभी कदम ही धरा था कि कोविड-19 यानी कोरोना के शिकंजे ने उसे जबरदस्त रूप से जकड़ लिया। नवंबर 2020 में चीन के वुहान शहर से निकले इस प्राणघातक वायरस ने धीरे-धीरे करते हुए पूरे विश्व को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया था। इंटरनेट की जबरदस्त पहुंच ने है विश्व भर में इस समाचार को पल-पल पहुंचाना शुरू किया कि कहां कितने लोग इस कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। जनवरी 2021 आते-आते विश्व का कोई भी महादेश इससे अछूता नहीं रह गया था। एक अज्ञात सा डर, एक अज्ञात सा भय, एक अज्ञात सी चिंता हर समय मानस को जकड़े रखती थी कि आखिर इस आसुरी शक्ति से कैसे निपटा जाए।

इसी बीच वो दिन भी आ गया जब 30 जनवरी 2020 को भारत के केरल प्रांत में कोरोनावायरस का पहला मरीज पाया गया एक छात्रा थी जो चीन के वुहान शहर से लौटी थी। फिर क्या था धीरे-धीरे हर दिन मरीजों की संख्या बढ़ती चली गई और एक-एक करके राज्य इसकी चपेट में आते चले गए।

इधर मार्च की गुनगुनी सुबह में बासंती समा प्रकृति को अपनी आगोश में समेट रही थी लेकिन जनमानस एक अज्ञात डर से श्रांत क्लांत एकांत में रुका हुआ रहना पसंद करता था। केंद्रीय विद्यालय में परीक्षाएं चल रही थी। वार्षिक परीक्षा अपने उत्कर्ष पर थीं और सीबीएसई की परीक्षा अपनी तरुणाई पर थी। ऐसे समय में एकबारगी 23 मार्च 2021 को लॉक डाउन का ऐलान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया। यह एक ऐसा कदम था जिसको देश ने इसके पहले आज तक कभी देखा नहीं था। कर्फ्यू से तो लोग वाकिफ थे लेकिन लॉकडाउन बिल्कुल नया अनुभव था। लॉक डाउन का मतलब सारे कामकाज बिल्कुल ठप लोग अपने घरों में कैद रहे हैं अत्यावश्यक कार्य के लिए भी बाहर निकलना यानी संक्रमण को बढ़ावा देना। जनमानस ने मोदी जी के इस आह्वान को हाथों हाथ लिया। सारे लोग घरों में दुबक गए स्कूल कॉलेज बैंक दफ्तर वाहन बाजार अस्पताल

लगभग सब बंद हो गए। ऐसा लगता था मानो जनमानस को सांप सूँघ गया हो।

मैं केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 बोकारो में काम करने वाला एक शिक्षक भला अपने शिक्षण वृत्ति से कैसे अपने आप को मुक्त रख पाता। वार्षिक परीक्षा की कॉपियां तो मैंने मूल्यांकित कर लब्धांक से छात्रों को अवगत करवा दिया, वह भी व्हाट्सएप के माध्यम से। परंतु नए सत्र में नई कक्षा के लिए छात्रों को उद्बोधित करने के लिए अकुलाहट से बैचैन रहता था।

इस समय भी आया जब कुछ उत्साही छात्रों ने एक व्हाट्सएप ग्रुप मेरे कहने पर बना लिया और फिर उस के माध्यम से प्रश्न उत्तर शंका समाधान आदि आदान-प्रदान होते चले गए। जानता था शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में यह प्रयास नाकाफी है। कुछ तो अलग करना होगा। फिर यूट्यूब के माध्यम से छोटे-छोटे लेक्चर रिकॉर्ड कर उसे अपलोड करने लगा। मैं जानता था जिज्ञासु के लिए यह प्रयास उत्तम है परंतु विद्यार्थी पढ़ाई से जी चुराते हैं उनके लिए मेरा यह प्रयास पर्याप्त नहीं है। बाकी हो तो या रहा था कि बच्चे मेरी पढ़ाई का यूट्यूब भैया व्हाट्सएप देखने के बहाने अभिभावक से मोबाइल लेते थे फिर अपने मनोनुकूल चैनल सर्च करने लगते थे। ऐसे में इसे रोक पाना भी मेरे लिए एक समस्या ही थी।

मैंने संबंध में अपने प्राचार्य से और सहकर्मियों से चर्चा की सारी चर्चाएं तो फोन के माध्यम से ही होती थीं। प्राचार्य महोदय महोदय ने सुझाव दिया जूम एप पर क्लास लेने का। इस एप पर काम करने का अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया था। आज तक ऐसे किसी प्लेटफार्म का प्रयोग मैंने नहीं किया था लेकिन प्राचार्य महोदय के निर्देश और मित्रों के सहयोग से हम सब ने ही इस एप पर क्लास लेना शुरू किया।

जूम एप पर काम करने का अनुभव नया था लेकिन अच्छा लगा। एक क्लास रूम की स्थिति यहां भी देखने को बन रही थी। छात्रों से रूबरू होने का मौका मिल रहा था, अध्यापन का अवसर मिल रहा था। ऐसा लगा मैं केंद्रीय विद्यालय से बाहर नहीं बल्कि मेरे मोबाइल में ही केंद्रीय विद्यालय की सारी कक्षा सिमट आई है। छात्रों से इस तरह रूबरू होने पर एक क्लास रूम का माहौल बनने लगा। उसके बाद तो जूम एप पर चीन वाली आपत्ति के कारण हम सब ने गूगल मीट पर क्लास लेना शुरू किया आगे चलकर क्लासरूम एप गृह कार्य देना उन्हें मूल्यांकन करना और फिर उन्हें वापस बच्चों

तक सपना यह सब बड़ा आसान हो गया। हृद तो तब हो गई जब पहली बार हम सब ने गूगल फॉर्म पर बच्चों की परीक्षाएं लीं और परीक्षाएं सफल रहीं। और अब लगता है कि इस डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके अपने आप को केंद्रीय विद्यालय संगठन की महिमा के अनुरूप हम शिक्षक भी स्वयं को अग्रणी रख सकेंगे।

गूगल फोन में परीक्षाएं लेने से इस पर डाटा लगभग प्राप्तांक बच्चों की कमजोरियां उनके सफल पक्ष सबकुछ का एक सांख्यिकीय रिकॉर्ड हमारे सामने उपस्थित होता है। ना केवल इतना है बल्कि है रिकॉर्ड सदा सर्वदा के लिए सुरक्षित ही रह जाता है।

धीरे-धीरे अनलॉक की प्रक्रिया भी शुरू हो गई और विद्यालय आना जाना संभव होने लगा। हम शिक्षक प्राचार्य महोदय से मिलकर नई नई रणनीति बनाने लगे। छात्रों के अध्यापन में सुगमता होने लगी। कुल मिलाकर यही लगा कि हर आपदा एक नया अवसर दे जाती है आत्ममंथन का आत्मावलोकन का और कुछ नया कर गुजरने का। अब तो धीरे धीरे कक्षाएं भी शुरू हो चली हैं। 10वीं और 12वीं की कक्षाएं नियमित रूप से चल रहे हैं डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ-साथ हम दोबारा पहले वाली पद्धति से अध्ययन अध्यापन के कार्य में संलग्न हो गए हैं। काबिले तारीफ है हमारे अधिकारी जिन्होंने कोरोना की विपरीत परिस्थिति में भी हममें जिजीविषा बनाए रखा। यहां तक कि सेवाकालीन प्रशिक्षण के दो-दो शिविर भी ऑनलाइन ही आयोजित हो गए। कुल मिलाकर आपदा एक अवसर भी दी जाती है केवल पहचानने की आवश्यकता है और उस फलक को जीने की आवश्यकता है।

स्वीच ऑफ

- विनीता परमार
स्नातक विज्ञान शिक्षिका
केवी पतरातू

आजकल उसे मतलब नहीं रहता सामने शोर है कि शांति। आँखों के सामने से पार होते दृश्य उसकी रेटिना पर ठहर नहीं पाते हैं; ऐसा वो नहीं कहती है; डॉक्टरों ने कह दिया है। एक मौन सुरंग में चली गई है इनकी स्मृतियाँ। दिमाग के तन्तु जब उलझते हैं उसमें अक्सर दिल के संवेदों का ऊपर-नीचे होना ही मुख्य कारण होता है। चुपचाप बैठे रहने वाली एनी अपनी पलकों को झपका नहीं पाती। उसकी स्मृतियों को

पति के या बेटे की थपकियों की जरूरत होती है। अतीत को कुरेदते वर्तमान में लौटना उसके लिए संभव ही नहीं हो पा रहा है। नींद भी दवाइयों के हवाले है। घंटों अपलक किसी एक चीज को निहारते वो चीखने लगती 'मैंने नहीं किया, मुझसे ऐसा कैसे हो गया?' फिर पति के स्पर्श को पाते ही अपने को थोड़ा संभालती है। पति कहता - "तुमने कुछ नहीं किया।" फिर माथे पर एक हल्की थाप पाते ही कंधे पर ही सो जाती है। कभी - कभी सुरंगों में चलने वाली स्मृतियाँ भी बल्ब सी रोशनी में कौंध जाती है। वो अपनी पिछली बातें बताने लगती है।

कल रात में नींद ठीक से आई थी सुबह नाश्ता भी ठीक से किया है। बाहर की हरियाली और बारिशों की फुहारों में आज एनी की सोई हुई तंतुएं जाग गई हैं। आँखें बंद कर रिमझिम फुहार में अपने मन को गोते लगाते हुए देख रही है। वो अपने बीते हुए सफेद पन्नों के साथ उन काले पन्नों को पलटने लगी।

"कैंटीन से ठहाकों की गूँज सुनाई दे रही है।" वैसे आमतौर पर यहाँ गहरी उदासी ही पसरी रहती है। यहाँ बिकनेवाली सारी चीजों को पता है कि बिकना है क्योंकि ये बेशर्म पेट तो मानेगा ही नहीं। अस्पताल का कैंटीन मरीजों के परिजन अस्पताल से निकलने की आस लिए ब्रेड, समोसे चाय से काम चलाते हैं। दिन भर मरीजों को बचाने की कवायद और उनके परिजनों को झूठी तसल्ली देकर उकताये हुए सिस्टर्स और इक्के - दुक्के डॉक्टर भी इस कैंटीन में दिख जाते हैं।

अभी ठहाके लगाने वाली सिस्टर्स हैं। सिस्टर मेरी ने ठहाकों के बीच से कहा - "सिस्टर एनी इस एगर्गल से काम नहीं चलने वाला, हमें तो बड़ी पार्टी चाहिए। हेड नर्स बनना इतना भी आसान नहीं।"

अरे ! इसमें क्या ? 'अगले साल तुम भी बन जाओगी' । यह पार्टी से ज्यादा साथ मिलना - जुलना ही हो रहा है। प्रोफेशनल लोग अपने इमोशनस को उड़ेलने की जुगत ऐसे ही करते हैं।

"भैया एक बड़ी स्प्राइट की बोतल देना। हरे बोतल में रखा सफेद पानी हरी भरी खुशियों के साथ कुछ ज्यादा ही हरा नज़र आ रहा है। बड़े बोतल को बिना हिलाए खोलते ही क्षणिक खुशियों की तरह बुलबुले सिस्टर मेरी की हाथों से गिरने लगे।"

एक - एक कर सबने प्लास्टिक के ग्लास में स्प्राइट लेकर चियर्स किया। प्लास्टिक के ग्लासों में खनक तो नहीं लेकिन मिलने - जुलने के तरंग कौंध रहे हैं।

थोड़ी देर की हँसी - ठिठोली के बाद एक चुप्पी छा गई। एक - दूसरे से अलग होने का सन्नाटा छा गया। कल से सिस्टर एनी हेड नर्स होकर आईसीयू में ड्यूटी देंगी।

“हमलोग आपको मिस करेंगे।”

“चाय के समय आपकी बहुत याद आयेगी।”

देखते ही देखते हर्ष के माहौल में एक विषाद की रेखा खींच गई।

“किसी दूसरे शहर तो नहीं जा रही हूँ, रहूँगी तो इसी अस्पताल में कभी मैं तो कभी तुमलोग समय निकालकर मिलते रहेंगे।”

आज आईसीयू में पहला दिन है। सबसे उम्रदराज नर्स सिस्टर एनी को समझा रही है - “किस पेशेंट को सीपीएपी सिस्टम लगाना है तो किसे ऑक्सीजन, पेशेंट मॉनिटर को कितनी देर पर देखते रहना है आदि, आदि।

सिस्टर एनी ध्यान से सारी बातों को रिवाइज कर रही है। क्योंकि इन सभी मशीनों से पाला तो पड़ चुका है।

तभी आईसीयू के रिसेप्शन पर फोन की घंटी बजी।

“जल्दी करना होगा एक पेशेंट आ रही है। उसे साँस लेने में तकलीफ है। उसे वार्ड से डॉक्टर ने वेंटीलेटर पर रखना रिक्मेंड किया है।”

जल्दी - जल्दी बेड तैयार हो गया।

ऑक्सीजन और सलाईन ड्रिप लगे हुए उस पेशेंट के साथ उसके रिश्तेदार, नर्स, वार्ड बॉय की ट्रॉली के पीछे - पीछे आईसीयू तक पहुँचे। सिक्स्यूरिटी गार्ड ने रिश्तेदार जो शायद उस रोगी का बेटा है उसे वहीं बाहर रोक दिया।

सिस्टर एनी आज सारे मशीनों को लगाना सीख रही हैं।

दूसरी नर्स ने रोगी के ब्लू कपड़े को बदल दिया अब मरीज ने गुलाबी कपड़ा पहन लिया। अस्पताल में भी कपड़ों से ही मरीजों के रुतबे का पता चलता है।

तभी छोटे चोंगे से एक अनाऊंसमेंट सुनाई पड़ा - मरीज के नाम के साथ यह बोला जा रहा है कि “उस पेशेंट के साथ जो हैं वो आ जाएँ।”

रिश्तेदार यानि बेटा दौड़कर पहुँचा अबकी बार गार्ड ने रोका नहीं। बाहर जूते उतारकर अंदर एक उम्मीद और दहशत के साथ वो आईसीयू के रिसेप्शन तक पहुँचा।

“आपको इन सभी जगह पर सिग्नेचर करना होगा”

इस दशा में सामान्य रूप से कोई कुछ पढ़ता नहीं है। जमीन - जायदाद के कागजात को पढ़कर सिग्नेचर करने की परंपरा रही है। “जान” कागजों में नहीं एक अनजाने विश्वास में दर्ज़ होते हैं।

“सिस्टर बता रही है इस पर साइन कीजिये। हमलोग पेशेंट का हाथ - पैर बांधेंगे, ये वेंटीलेटर, तो ये ऑक्सीजन, ----- तो ये ---- जाने कितनी जगह सिस्टर ने साइन करवाया।”

बेटा पूछ रहा है - “अभी वो कैसी हैं?”

“थोड़ी देर वेट कीजिए आप दूर से खड़े होकर देख लीजिएगा।”

अब उस बेटे की माँ का नाम बेड में बदल चुका है।

“बेड नंबर बारह”

बेटे को बुलाया गया।

“दूर से उसने पेशेंट मॉनिटर की आड़ी - तिरछी लाइनों को समझने की कोशिश की।”

पल्स रेट, ब्लड - प्रेशर, कार्बन - ऑक्सीजन जैसी बातों को देखता वो अपने जीवन की उठती-गिरती रेखाओं के बारे में सोचते जाने कहाँ खो गया?

“चलिए - चलिए आईसीयू में इतनी देर नहीं रह सकते।”

“जी - जी बस निकल रहा हूँ।”

“सिस्टर माँ का ख्याल रखिएगा लगभग घिघियाता हुआ वह रिसेप्शन से एक कार्ड लेकर बाहर चला गया।”

“वह कार्ड मिलने की आस है। छूटती साँसें उस कार्ड के इर्द - गिर्द ही बंधी है।”

एटीएम कार्ड की तरह पर्स में माँ की फोटो के साथ संभाल कर रख लिया।

“सिस्टर देखिएगा”

अस्पताल में हर आनेवाला यही कहता है सिस्टर एनी से।

लेकिन आज आईसीयू में इस पहले वेंटीलेटर वाले पेशेंट को देखकर मन में एक गज़ब की खलबली मच गई।

आमतौर पर इस पेशे वाले सेवा भाव के साथ मरीज से एक विरक्ति का भी नाता जोड़ लेते हैं। सिस्टर एनी को अपनी माँ और भाई याद आने लगे वैसे ही विवश था उसका भाई और वो दूर थी।

आज उसे अपनी माँ का चेहरा सामने दिखने लगा। जितनी देर सिस्टर एनी की ड्यूटी रहती सारे पेशेंट के साथ उस पेशेंट का विशेष ख्याल रखती।

हर शाम चार बजे दूर से ही देखने बेड नंबर बारह का बेटा आता। सिस्टर एनी की सेवा और दवाइयों ने रंग दिखाया पांचवे दिन डॉक्टर्स ने वेंटीलेटर हटाने का निर्णय लिया।

सिस्टर एनी ने वेंटीलेटर स्वीच ऑफ कर एक सुकून की साँस ली।

हालांकि, ऑक्सीजन लगे उस पेशेंट को देख दूर से देख मुस्कराई - आईसीयू में पहली सफलता। मन - ही - मन खुश है। उसके बेटे को देख एक चैन मिला।

“आज वो कितना खुश है। यह खुशी अस्पताल के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने की खुशी है। कुछ तात्कालिक

बदलाव भी आपके मन और रंग को बदल सकते हैं। “साँस देनेवाली यह मशीन अजीब होती है उससे छुटकारा एक बड़ी सफलता है।”

अब सिस्टर एनी ने सबकुछ यानि यंत्रों पर साँसों को चलाना सीख लिया है। अपने काम से रोजी - रोटी चलाने वाले लोग भी कुछ ज्यादा अच्छा कर सबके चहेते बन जाते हैं। जैसे एनी अब आईसीयू में सबकी चहेती बन चुकी है। डॉक्टरों की जुबान पर उसका ही नाम रहता है। वेंटिलेटर लगाना और स्विच ऑफ करने का काम उसका ही हो गया। पिछले छः महीने में वेंटिलेटर पर गये सारे मरीज बच गये थे। वैज्ञानिक आविष्कारों और दवाइयों से जिलाने वाले डॉक्टर और नर्स एक - बार जरूर कहते आपका हाथ शुभ है।

मन - ही - मन खुश होती सिस्टर एनी जब घर जाती तो अपने बेटे, पति सब पर उसी ऊर्जा के साथ ध्यान देती है। बेटे को थोड़ी देर पढ़ाना, स्कूल की बातें करना तो अपने टिफिन के लिए भी पति के पसंद का सामान बनाना ये सारी बातें उसकी दिनचर्या में शामिल हैं।

बेटे के फाइनल एक्जाम हो गये। दस दिन की छुट्टी ले ली है। पति और बच्चे के साथ अगले सोमवार को शिलॉन्ग जाने का प्रोग्राम है। आज बाज़ार से दो जींस, कुछ कुर्ते तो बेटे और पति के लिए टी - शर्ट लेकर आई।

पूरे उत्साह में है सिस्टर एनी। भला क्यों न हो? पिछले दो साल से कहीं बाहर नहीं गई है। नौकरी और परिवार में उलझा इंसान प्रकृति की गोद में अपने को पहचान पाता है। आज उसकी सेकंड शिफ्ट ड्यूटी है। सिस्टर रोज से घूमने के सारे प्रोग्राम बता रही है।

तभी सिस्टर मेरी ने चिंता जताई - “टीवी के समाचारों और एक नई बीमारी की बातें करने लगी”।



फिर मरीजों के साथ काम करते वह दिन निकल गया। घूमने जाने में चार - पाँच दिन बचे हैं।

टीवी के समाचारों ने एक चिंता उभार दी है। फिर भी, अब तक अपने देश और शहर में बीमारी ने दस्तक नहीं दी है यह आश्चर्य है।

अभी घर पहुँची ही कि अस्पताल से फोन आया - “सिस्टर आपको फिर से अस्पताल आना पड़ेगा। इमरजेंसी ड्यूटी है जल्दी आ जाइए।”

अस्पताल में अफरा - तफरी मचा हुआ है। सिस्टर एनी को आईसीयू में बीस और बेड लगवाने की हिदायत मिल गई है। कुछ पेशेंट जो वेंटिलेटर पर नहीं हैं उन्हें वार्ड में शिफ्ट करने बोल दिया गया है। यहाँ के बाकी पेशेंट्स को दस बेड वाले नए आईसीयू में भेज दिया गया। डॉक्टर, नर्स, वार्ड बॉय सफाई कर्मी सभी इधर - उधर भाग रहे हैं। मानो अस्पताल पर कहर टूट पड़ा हो। कोई बड़ा भूचाल आनेवाला हो।

सिस्टर एनी अपनी सेवा और प्रतिज्ञा के अनुसार तलीन्नता से काम में जुट गई। इसी बीच डॉक्टरों के साथ दो बार छोटी मीटिंग भी हो चुकी है।

नई बीमारी कोरोना जोकि छुतहा है। नये वार्ड में भी काम करने के लिए एक्सपर्ट नर्स रखे जा रहे हैं। सिस्टर एनी को आईसीयू में ही रहना है उनके पास रहेगा मशीनों के हैंडिलिंग का काम।

“आपके हाथ तो शुभ हैं मरीज के ठीक होने पर ही आपको वेंटिलेटर स्वीच ऑफ करना पड़ा है।”

एनी हैरान है उसे तो घूमने जाना है।

उसकी टिकट खुद-ब-खुद कैंसिल हो गई। गाडियाँ बंद हो गई हैं।

कल्पना से समय का इस कदर पलटना उसने अपने जीवन में पहली बार देखा है।

आज वार्ड से दो मरीजों को आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है। देखते - देखते अब सिस्टर एनी की ड्यूटी आठ घंटे की नहीं चौबीस घंटे की हो चुकी है।

मीटिंग में इन रोगियों के साथ काम करने के लिए प्रोटेक्सन के सारे तरीके बताए जाते हैं।

सारे उत्क्रम करने के बावजूद एक भय लगा रहता कि कहीं अनजाने में वो इन्फेक्शन लेकर घर चली जायेगी।

आईसीयू की दशा बदल चुकी है अब कोई कहने नहीं आता - “सिस्टर ख्याल रखिएगा”।

अब न कोई रोगी को देखने आता न कोई सिग्नेचर वहाँ करवाया जा रहा है। मरीज सिर्फ किसी परिवार के नहीं देश के, अस्पताल के, डॉक्टर के, नर्स के हैं। इनके नाम क्या बेड नंबर भी पूछनेवाला कोई नहीं है। दिन - ब - दिन आईसीयू में रोगियों की संख्या बढ़ने लगी।

रोज डॉक्टर ,नर्स सबकी मीटिंग एक नई स्ट्रेटेजी नई प्लानिंग होती है ।

दूसरी तरफ वेंटिलेटर के साथ पेशेंट के मॉनिटर को हर पल नज़र रखती सिस्टर एनी अपने भारी-भरकम प्रोटेक्टिव ड्रेस में जाने कब रो लेती और जाने कब आँसू सूख जाते हैं ।

एक संतोष है घर पर उसके बेटे के साथ पति तो हैं। सेवा और कुछ अलग करनेवाले भाव में अपने इन्फेक्टेड होने का डर धीरे - धीरे खत्म हो चुका है। शुरु में ही आईसीयू में आये मरीज को आज आठ दिन हो चुके हैं। अजीशोमायसिन की डोज़ से बुखार तो थोड़ा कम है लेकिन साँसों की ऊपर-नीचे जाती लाइनें अबनॉर्मल है। ब्लड और यूरिन टेस्ट की रिपोर्ट ठीक नहीं है । फेफड़े में लगातार कार्बन - डाई- ऑक्साइड भरते जा रहा है। आस -पास के सभी बेडों पर मरीज पड़े हुए हैं एक - दूसरे की पहचान से नावाक़िफ़ । मरीज नीम - बेहोशी में हैं उन्हें अपने बारे में कुछ नहीं पता है जद में तो हैं डॉक्टर।

बचा लेना है कैसे भी बचाना है । आज की रिपोर्ट में उस मरीज के लगभग सभी अंग काम करना बंद कर चुके हैं । वेंटिलेटर के भरोसे साँसें चल रही हैं फेफड़े की दीवारों में हवा की जगह सङ्क्रमण ने ले रखा है।

मेडिकल टीम की फाइनल रिपोर्ट आ चुकी है। इस पेशेंट की साँसें अब कृत्रिम हैं अब दवाइयाँ या डॉक्टर कुछ नहीं कर सकते। सिस्टर एनी के जीवन में स्वीच ऑफ करने का ऐसा दिन जिसमें ऑफ करते ही मरीज की साँसें टूट जायेंगी। फेफड़े का लाल रंग काला पड़ जायेगा। एनी अपने को समझा रही है । नौकरी का ही तो हिस्सा है । उसे अपना फर्ज़ ही तो निभाना है। इस बीमारी में किसी घर वाले को इंतज़ार के लिए भी बाहर नहीं बुला सकते। उन्हें यह बताया भी नहीं जा सकता कि उनके पेशेंट के साथ क्या होनेवाला है।

मरीज के घर फोन लगाकर स्पीकर पर रख एनी इंतज़ार करने लगी फोन पति ने उठाया। वो कैसी है ?

- “आपकी पत्नी सो रही हैं उनके बारे में ज्यादा कुछ बता नहीं सकते। सब इलाज की कोशिश में लगे हैं अगले पल क्या हो जाये कुछ पता नहीं? उनकी साँसें वेंटिलेटर पर टंगी हैं ।”

पास बैठी बेटी की आवाज़ भी आ रही है विडियो कॉल से माँ को देखना है ।

“नहीं आईसीयू में विडियो कॉल नहीं कर सकते”

“सिस्टर ने बुझे मन से होप फॉर द बेस्ट कह फोन रख दिया।”

मेडिकल टीम के निर्णयानुसार रोगी को अब चैन से मरने देना है।

साँसों की लड़ाई को रोकनी है ।

साँसों के यंत्र को स्वीच ऑफ कर देनी है । सिस्टर एनी ने मशीन को जाने कितनी बार स्वीच ऑफ किया था लेकिन आज का स्वीच ऑफ मशीन का नहीं जीवन के प्रकाश को अंधकार में बदलने का है।

दूसरी तरफ वार्ड के सारे मरीज बेसुध पड़े हैं।

सिस्टर एनी ने उस पेशेंट के बेड के चारों ओर का पर्दा गिरा दिया है। सोचने लगी -“इस गिरे हुए पर्दे के साथ मरीज के जीवन का पर्दा भी गिर जायेगा। जीवन के स्क्रिप्ट की इस नायिका ने कभी सोचा ही न होगा कि बिना उसके अभिनय के खुद-ब -खुद पर्दा गिरनेवाला है । उसके इर्द-गिर्द कोई खड़ा होनेवाला भी न होगा।”

मन में भारी बोझ लिए हुए काँपते हाथों से सिस्टर एनी ने वेंटिलेटर का स्वीच ऑफ किया। मशीन के बंद होते ही सारी मेडिकल टीम रुक गई। आईसीयू की घड़ी और सारी धड़कने उसी मशीन के इर्द-गिर्द टिक - टिक करने लगी।

एनी ने मरीज का हाथ पकड़े रखा। बंद होती नब्ज साथ ही साथ बर्फ़ सी ठंडी होने लगी ।

मरीज के मॉनिटर की लाइट मद्धम होने लगी । ऊपर - नीचे जाती लाइनें अब सपाट होने लगी । पाँच मिनट के अंदर टंगा हुआ दम टूट चुका है। टिक-टिक की आवाज़ के थमते ही एनी की धड़कने तेज़ हो गई पूरा वदन पसीने से भीग गया। सिस्टर एनी की आँखों में नमी है। मानो इस मौत की अकेली गवाह। दास्ताने डले हाथों ने स्पंदन को बंद होते महसूस किया है। पूरा शरीर थर- थर काँप रहा है। ऐसा नहीं उसके सामने यह पहली मौत है। आने - जाने के भ्रम को समझती है एनी। उस पेशेंट की धड़कनों और उसकी ख़ासी की आवाज़ के साथ उसके इंतज़ार के पल - पल का हिसाब रखा था एनी ने।

पिछले पंद्रह दिनों से जीवन - मौत की जंग लड़ रही थी वो। किसी से नहीं मिलने आस - पास के अनजाने चेहरों के बीच एक टापू जिससे बाहर निकलने की जद हार चुकी है वो। भारी - भडकम प्रोटेक्टिव कपड़े पहने एनी के चेहरे को भी वो कहाँ देख पाई थी। इशारों और तरंगों को नहीं समझा पाई वो ।

अस्पताल के नियम के अनुसार उस मरीज को अंतिम कपड़ा एनी ने ही पहनाया और बाँडी पैक में रख दिया गया । मरीज के रिश्तेदारों को नियमानुसार बाँडी अंतिम दर्शन के लिए बुला लिया गया।

उदासी पीछे खींचती है। सिस्टर एनी को पहले दिन की बात बार - बार याद आ रही है।

“आपके हाथ शुभ होते हैं, मरीजों को बचने के बाद स्वीच ऑफ करनेवाले हाथ। उसका पति उससे अंतिम समय में भी मिल नहीं पाया”

अनमने ढंग से काम कर रही सिस्टर एनी को आज ख़ासी आ रही है हल्का बुखार भी है। जैसे ही ये बात पता चली छुतहा रोगी के साथ काम करने के कारण सिस्टर एनी को आइसोलेट कर दिया गया है।

आईसीयू के दोस्तों से दूर, बच्चे से पति से अलग एक अकेली दुनिया जहाँ खुद वह एकांत की टापू है।

सिस्टर मारिया आज स्वाब टेस्ट के लिए लेने आई तो एनी बोले जा रही है -

“मैंने उसे नहीं मारा, मैंने उसे नहीं मारा।”

“एनी ऐसा मत सोचो वो तो हमारे जॉब का हिस्सा है। हमने - तुमने कितने मरने - जीने को देखा है।”

दो दिनों बाद रिपोर्ट आ गई है।

रिपोर्ट निगेटिव आया है फिर भी चौदह दिन आइसोलेशन में ही रहना है। आइसोलेशन मतलब टापू भीतर टापू का जन्म। अपने उस बंधन में जकड़ी सिस्टर एनी के आज चौदह दिन पूरे हो गए। उसने अपने इस टापू में दिमागी तंतुओं को एक जगह ही फंसा लिया।

आज घर भेज दी गई सिस्टर एनी।

बेटा और पति स्वागत के लिए खड़े हैं जैसे इतने दिनों का सूनापन भरनेवाला हो।

बारिश धीमी हुई है अपनी स्मृतियों में घूमती वो अचानक से चिहुंक उठी।

“नहीं, नहीं मैंने तो कितनी बार स्वीच ऑफ किया।

ये लाइनें सपाट नहीं हुई हैं, उसे तो वार्ड में जाना है।

ये बाँडी नहीं है। पैक क्यों करवा रहे हो ?”

“मैंने नहीं मारा।”

“मैंने स्विच ऑफ जानबूझ कर नहीं किया।”

“तुम्हारे पति से मैंने झूठ बोला तुम सो रही हो।”

“एनी-एनी उठो देखो तुम घर में हो।”

एनी के ऐसे दौरों की समझ उसके पति को हो चुकी है। एनी को बच्चों जैसे पुचकारते गले लगा लिया।

बालों में तेल लगाया हल्की चंपी के बाद एनी पति के गोद में ही सो गई।

अभी बेटे ने मैगी बनाई है। “मम्मा उठेगी तों मैं खिलाऊँगा।”

दोनों बाप - बेटों ने तसल्ली से एक - दूसरे को देखा।

“हाँ बेटा! मम्मा जल्दी ही वापस होगी।”

कुदरत की सीख

-हिमनशी नायक

कक्षा 7,

केन्द्रीय विद्यालया चतरा

कैसे हो, दो पैर वालो, कैसा लग रहा है?

घर में क्यों हो मेरे लाल ? घूमने चलो, मौसम अच्छा हो गया है।

अच्छा! अब आया समझ में! सीने में घुस गया है डर,

बॉम्बे से लेकर बर्लिन तक कोरोना ने सब को भेज दिया घर।

इतने नकाब पहनते थे, एक और पहन लेना आज सैनीटाइज़र को भी साथ लेने का बना लो रिवाज़।

पैसों की हेकड़ी, छप्पनभोग खाना, ऐश ओ आराम हरदम,

सारी अय्याशी एक ही पल में हो गई खत्म।

सोचा था कि यह धरती तो है अपने बाप की,

अब आई अक्ल ठिकाने, भुगत रहे हैं सज़ा अपने पाप की।

बेवकूफ बना के लोगो को, मज़ा लेते थे जो,

अपनी शकल आइने में देख कर आज पछता रहे हैं वो।

दिख रहा है दुनिया का यह अजीब ओ गरीब खेल, मोहल्ले की बिल्ली भी हो गई पास, और आप हो गए फ़ेल।

शेर, भालू और हाथी की बाहर लग गयी है भीड़,

घर बन गया चिड़ियाघर, लोगो के पैरों में जंजीर।

कोरोना की कहानी

- पूजा कुमारी

कक्षा : नवम 'ब'

केंद्रीय विद्यालय पतरातू

एक समय की बात है, जब विश्व में सभी लोग आराम से जीवन व्यतीत कर रहे थे, तभी एकाएक कोरोना महामारी फैली, किसी को इसका अंदाजा न था। किसी ने सोचा और समझा कि यह भगवान की कहर है, तो किसी ने इसे जानबूझकर फैलाई गई महामारी। ये बीमारी इतनी खतरनाक है कि महज संक्रमित लोगों के संपर्क में आने से ही दूसरे को भी संक्रमण हो जाता है। अतः लोगों को दूरी बनाकर



(किसी के संपर्क में न आना) रहना शुरू कर दिया। मानव इतिहास में शायद ही कभी ऐसी घटना घटी हो कि दुनियाभर के तमाम स्कूल, कॉलेज, सार्वजनिक स्थानों को बंद करना पड़ा। इसने लोगों के रोजगार, जीवन, देश की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया। हमारे जैसे छात्रों की शिक्षा को भी प्रभावित किया। आज हम स्कूल के दीदार को तरस गए हैं। सारे परिवहन माध्यम बंद हो गए। वाइरस को रोकने के लिए लोगों ने समय-समय पर हाथ धोया, मास्क पहना, बाहर जाने पर प्रबंध लगाया, हाथों को सैनीटाईज किया। हालांकि, शिक्षा को ज्यादा दिन रोकना सही नहीं था, इसलिए इसका हल ऑनलाइन शिक्षण से निकला। जहाँ शिक्षकों ने अपना पूरा योगदान दिया। परंतु, इसमें भी समस्या थी लेकिन यह कोरोना महामारी में शिक्षा का केवल एक माध्यम था।

जो बेरोजगार हो चुके थे, जो भुखमरी से गुजर रहे थे जो अपनी न्यूनतम जरूरत को पूरा नहीं कर पा रहे थे उनके लिए सरकार ने भोजन का प्रबंधन किया और रिलीफ दिलाया इस महामारी में लोग अधिकतर गरीबों ने बहुत कष्ट झेला

कोरोना कि कहानी कक्षा पहली के बच्चे की जुबानी

-अंशु

प्राथमिक शिक्षक

केंद्रीय विद्यालय पतरातू

अरे देखो ये क्या हो गया,
कोरोना के नाम पे तो हमारा ये साल घर में ही खो गया....

स्कूल देखना चाहते थे हम बच्चे,
पर टीचर ने फोन पे दिखाएं हम स्कूल के नक्शे...
हमने तो बस सुना था नाम स्कूल का,
ना देखने को मिला पूरा साल हाल स्कूल का....
मिले ऑनलाइन हम हमारे प्रधानाचार्य जी और सभी
अध्यापक गण से,
बताएं सबने कोरोना से बचने के रास्ते....
सुना था टीचर होते हैं बहुत प्यारे,
उन्हें देखना चाहते हम भी बच्चे सारे....
स्कूल जाते तो होता हमारा भी लंच टाइम,
हमे भी पापा की तरह मिलता टिफिन ऑन टाइम.....

हमारे भी बनते दोस्त अनेक,
उनके साथ बैठे सीखते हम बातें अनेक...
बड़े भैया दीदी के बचपन में था फोन पर पाबंद,
पर हम बचपन से ही मिला फोन न्यू एकदम....
ऑनलाइन जुड़े रहे

टीचर से हमसब,
घर बैठे उनसे पढ़ते रहे हम सब..
बस घर बैठे हुए हमें एक ही फायदा,
ना पड़ा हमें किताबों का बोझ कंधों पे ज्यादा....
लेकिन किया हमने अपने स्कूल को बहुत मिस,
कब होगा इस कोरोना का खत्म रिस्क...
बस दुआ है रहे आप सब घर में एक दम फिट....

कोविड-19 को भगाना है।

- डॉ. लालमणि कुमारी भगत

(सामाजिक विज्ञान शिक्षक) केंद्रीय विद्यालय, चंद्रपुरा

कोरोना भागे या न भागे,

ये तो हिम्मत और प्रयास की बात है।

हम मास्क न पहनें, दूरी न बनायें,

हाथ मिलायें और वक्त पर हाथ साफ न करें

ये तो गलत बात है, ये तो गलत बात है।

खुद को काबू में रखना सीखना है

कोविड-19 को देश से भगाना है।

बनकर देवदूत घर-घर में पीपीई किट पहनाना है,

पूरे देश में एन्टी वायरस का अभियान चलाना है।

वैक्सीन लेकर स्वस्थ होना है वतन के लिये,

कितनों के जीवन मर मिटे, पूरे नहीं हुये किसी के

किन्तु हौसला बुलन्द रखना है,

कोविड-19 को जड़ से मिटाना है।

राह में कितनी बाधाएँ आए,

उनपर तनिक न ध्यान देना है,

कर्मठता से कानून का पालन करना है,

कोरोना वारियर्स के अथक प्रयास से

देश को कोविड-19 से छुटकारा दिलाना है।

कोरोना और शून्यता

-मनोरंजन कुमार

स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक, हिंदी

केंद्रीय विद्यालय, पतरातू

इस बीमारी की शुरुआत जैसे ही हुई एक शून्य नामक जीव की वृद्धि होती गई। इसमें महज ना केवल मृत लोगों की संख्या में शून्यों की संख्या में बढ़ोतरी हुई। धीरे - धीरे इसे देखने वालों की संख्या में भी शून्यता चक्रवृद्धि में बढ़ती गई।

जैसे ही कोरोना के कारण लोग घरों में बंद रहने के लिए मजबूर हुए, लोगों में शून्यता भी घर करती गई। इस दौरान मैंने महसूस किया कि ऐसा लगा कि संवेदना शून्य हो गई हो। ये संवेदना की शून्यता मनुष्य के प्रति मनुष्य के लिए ही केवल नहीं था बल्कि ये एक प्रकार की स्व शून्यता भी थी, जिसमें मेरे जैसा इंसान जो एक अलग घेरे में खड़ा होकर सिर्फ और सिर्फ शून्य को निहार रहा था। विशेषकर जब मैंने

मजदूर, मजदूरों को सड़क पर चलते देखा तो लगा कि मैं उस ब्लैक होल में फँस गया हूँ। मैं लिखने की सोचता तो मुझे महसूस हुआ कि मैं भाव शून्यता का शिकार हो गया हूँ, ऐसी शून्यता जहाँ लग रहा था मैं विचार शून्य हो गया हूँ। मैं न्यूज़, सोशल साइट्स को पढ़ते देखते देखा कि बौद्धिक तबके में भी लाइव का इतना शोर हो गया कि समझ नहीं आता था कि किसे सुना जाए। हर कोई अपनी बात कहने को आतुर थे और मेरे जैसा श्रोता अब सुनते-सुनते सुन्न हुआ जा रहा था। कभी - कभी कोरोना पर खबर पढ़ते - पढ़ते मैं तर्क शून्य हो जाता था। असहाय लोगों की बेबसी एक बड़े शून्य में खो रही थी जिसकी पुकार सुनने वाले लोग सभी दृष्टिकोण से सुन्न और शून्यता को प्राप्त कर चुके थे।

हालाँकि, इस दौरान भी मनुष्य के हौसला, एक दूसरे को मदद करने की क्षमता, दूसरे की प्रति सहानुभूति में कोई शून्यता नहीं आई थी और यही चीज मनुष्य के इंसान होने की बानगी थी। मैं लोगों की मदद करने पर खुद को असहाय पा रहा था और ये चीज मुझे खूब सालता था।

शोधार्थी अतुल ने शून्यता पर क्या खूब कहा है,

"तुम्हारी शून्यता ने तुम्हें मशहूर कर दिया, मेरा खोखलापन मुझे रोज़ गिराता है।"

कोरोना काल और मैं

-कुमार संजीव, कक्षा पाँचवीं

केंद्रीय विद्यालय मधुपुर (देवघर)

कोरोना काल में मुझे और मेरे परिवार को परेशानियों में रहना पड़ा। इसका कारण यह है कि स्कूल में जो मज़ा आता था, वो घर बैठकर नहीं आता है। पर मैंने इसका हल निकाल लिया था। मैंने घर में रहने के दौरान एक खिलौना बनाकर खेला। इससे मुझे बहुत मज़ा आया। मैं पढ़ता भी था और खेलता भी था और टी० वी० भी देखता था।

इस कोरोना काल में मुझे कई हॉबी विकसित करने का मौका मिला और साथ ही पुराने हॉबी को पूरा करने का भी मौका मिला। पहला था ड्रॉइंग करना, मेरी एक ड्रॉइंग जो कोरोना



काल से जुड़ी है।

दूसरा कोर्स की किताबें पढ़ना और कहानियों की किताबें पढ़ना तथा नए खेल खेलना सीखना एवं पेड़ पौधे लगाना सीखना क्योंकि मुझे पेड़ पौधे लगाना पहले नहीं आता था।

दैनिक कार्यकलापों में भी बहुत परिवर्तन हुआ जैसे कि स्कूल के समय मुझे पाँच बजे उठना पड़ता था पर इस काल में छह बजे उठता हूँ। पहले 7.50 बजे विद्यालय में प्रार्थना होती थी, अब 8.15 पू० बजे ऑनलाइन प्रार्थना सभा होती है। टाइम टेबल के अनुसार ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना होता है। कभी कभी नेटवर्क की समस्या के कारण कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं देता है। ऐसे में कई बार मुझे एक ही सवाल बार बार अपने शिक्षक से पूछना पड़ता है। विद्यालय में ऐसा नहीं होता था।

भविष्य में अब जब भी विद्यालय खुलेगा, मुझे मास्क लगाकर और सैनिटाइज़र साथ में लेकर जाना होगा।

अपग्रेड

-सोनाक्षी गुप्ता, IX
के .वि.बरकाकाना

सोचा था कोरोना जा रहा है

सुना है वो अपग्रेड होकर आ रहा है

अभी तो छूने से फैलता है

अब क्या निहारने से फैलेगा ???

नाक मुँह तो ढँक लिया

अब क्या आँखों को भी छिपाना पड़ेगा ???

घर में तो बंद किया था अपने को

अब क्या रजाई में रहना पड़ेगा ???

खूब पिया काढ़ा

अब क्या काढ़े में डूबना पड़ेगा ???

समस्या जा रही है

या भूँयकर आ रही है

थाली पीटी

अब क्या सर पीटेंगे

दीया जलाया

अब क्या घर जला देंगे

खूब डर लिया 2020 में

अब क्या 2021 में और ज्यादा डरना पड़ेगा???

क्या दुनिया बदल गई

हमको भी बदलना पड़ेगा

क्या जीवन अब ऐसे ही चलेगा ???

जो कहे सरकार

सुनना तो पड़ेगा

और जो ना कहे सरकार

वो भी करना पड़ेगा !!!

कुल मिलाकर

हमको भी खुद अपग्रेड करना पड़ेगा !!!

ब्लैकबोर्ड से मोबाईल का सफ़र

-जयवन्त राज

कक्षा : सातवीं 'ब'

केंद्रीय विद्यालय पतरातू

कभी ब्लैकबोर्ड हुआ करता था हमारे ज्ञान का खजाना

पर अब तो आ गया मोबाईल का जमाना |

बंद पड़ी है स्कूल हमारी

यादें यारों संग सब हो रहा पुराना।

बिना स्कूल के पल - पल ऐसे बीत रहे हैं
जैसे लग रहा है हम पी रहे हैं जहर
अब कब होगा खत्म ये कोरोना का कहर
कब हम जैसे बालकों के लिए होगा एक नया सहर ।

जब से कोरोना आई है

-शुभश्री वर्मा,वर्ग- आठवीं
केंद्रीय विद्यालय, दुमका

इसने चारों ओर त्राहि मचाई है
यह कैसी घड़ी आई है जिसमें अंतकाल में भी
अपनों से दूर रहने की मजबूरी पाई है
यह वक्त है बहुत दुष्कर
हमने अपने भाई - बंधुओं को गवाई है।
जिनके बिना हम ना जी सकते थे एक भी पल
आंसू बहा कर अपनी ज़िंदगी बचाई।
मुश्किल समय आई है
कोरोना ने कोहराम मचाई है
दो गज की दूरी और मास्क को जरूरी बना कर
खुद को कोरोना से बचाई है
रहे ज़िंदगी सलामत
इस अनमोल ज़िंदगी को
लाख कोशिश करके बचाई है।
कोरोना लील ना जाए ज़िंदगी
इसलिए हमने वैक्सिन बनाई है।

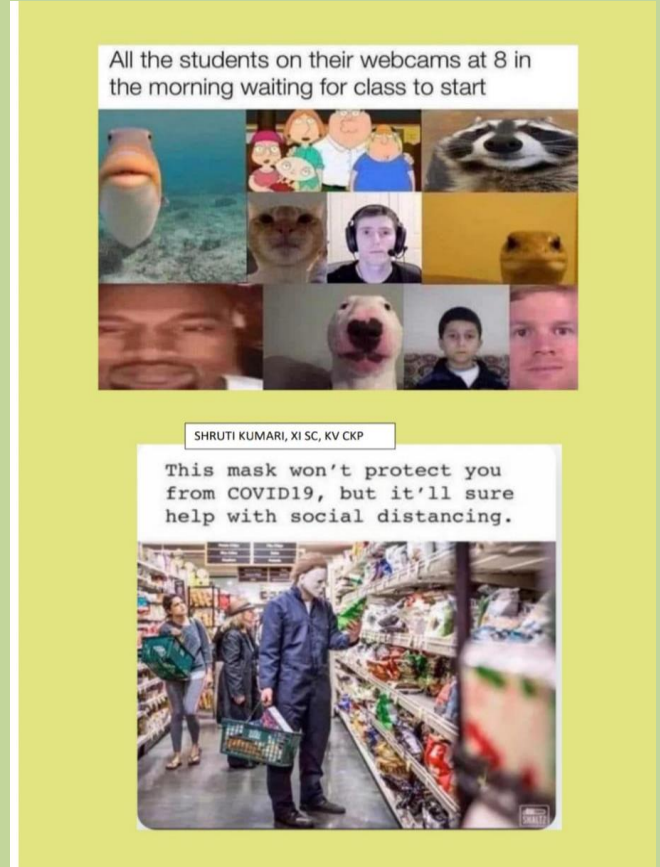
प्रकृति की लीला

-सीमा नाग
पी जी टी अर्थशास्त्र
केंद्रीय विद्यालय बरकाकाना

प्रतियोगिता की होड़ में लोग गए थे ,
भोग विलासिता में संलिप्त थे।
आवश्यकताओं को लोग बढ़ाते जा रहे थे,
विकास के पद पर बढ़ते जा रहे थे।
कोरोना आया दिल दहलाया।
बन्द हुई दुकानें,
बन्द हुआ जरिया आय का।
बता दिया वर्तमान का महत्त्व ,



समझा दिया प्रकृति ने औकात सभी को।
 प्रकृति संपदा के दोहन में लोग लगे थे,
 प्रकृति के विनाश में संलिप्त थे।
 संस्कृति और परंपराओं को छोड़ते जा रहे थे,
 मानवीय मूल्यों को तोड़ते जा रहे थे।
 कोरोना आया दिल दहलाया।
 रुक गए कदम, थम गई ज़िन्दगी।
 बता दिया मानवीय मूल्यों तथा संस्कृति का महत्व,
 समझा दिया धारणीय विकास का अर्थ सभी को।



कहर कोरोना का

-सुरुचि कुमारी
कक्षा : नवीं 'अ'
केंद्रीय विद्यालय, पतरा

सूरज की किरणें ढलने लगी,
अंधकार जग में छाया था ।
खिड़की दरवाजे सब बंद हुए,
जब कोरोना ने कहर दिखाया था ।
अपनो से अपने दूर गए,
डर - डर कर वक्त गुजारा था ।
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, के जब दरवाजे बंद हुए ।
जिंदगी और मौत में,
जंग ऐसी शुरू हुई ।
अपनो को दफनाने के लिए शमशानों में भी थी जगह नहीं
इस बेरहम बीमारी ने ऐसा भी पल दिखलाया था ।
दूर थे जो अपनो से
उन्हें खून के आँसू रुलाया था ।
ना खाने को रोटी थी
ना आने का साधन था ।
पथ के कांटों पर चल कर के जो मीलों दूर चले आए,
कितनों की साँसे रुकी,
कितने घर आ कर अपनों को भी ना पाए ।
पर ईश्वर ने अवतार लिया,
जीवन की कशितियाँ बचाने को ।
डॉक्टर, नर्स, पुलिस, सब ने मिलकर संघर्ष किया कोरोना
दूर भागने को ।
अपनी जान हथेली पर ले कर नया सवेरा लाने को ।

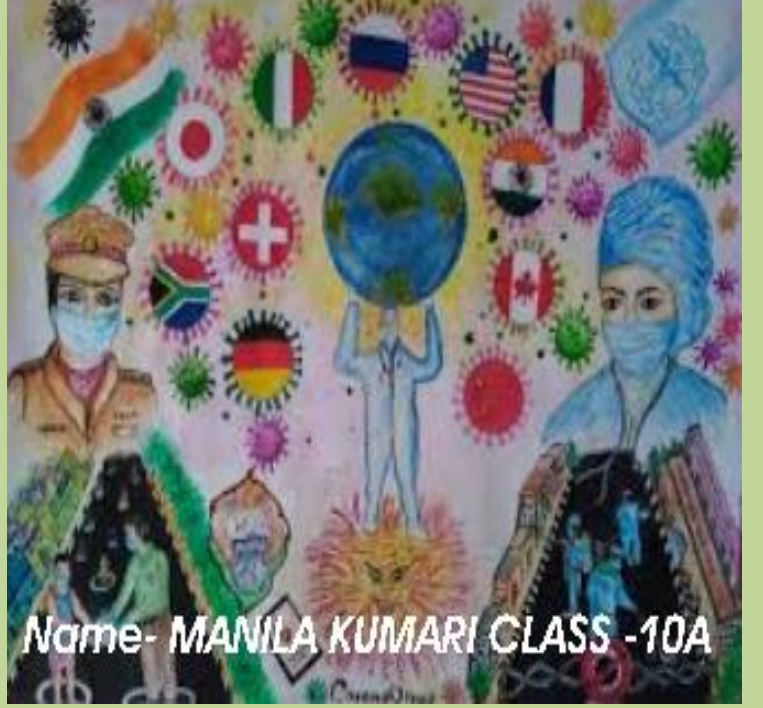
बच्चों के चश्मे से कोरोना

-विकास आनंद
पी जी टी कॉमर्स
केंद्रीय विद्यालय बरकाकाना
कोरोना आया, कोरोना आया
हमारे मन में भय लाया।
औरों के जीवन कठिन और जटिल बनाया,
पर, हम बबुआ लोग तो घर में मस्त हुआ,
मोबाइल पर पढ़ते- पढ़ते पस्त हुआ।
गुरुजी का 'ऑनलाइन' आना उनका पढ़ाना
न समझे, तो भी समझाना।

गूगल मीट पर हमारा आना जाना,
कभी नेटवर्क तो कभी मोबाइल हुआ बहाना।

सीख गए हम बात बनाना ,

पर नहीं सीखे हम गणित सुलझाना।
घर बैठे, हुए हम परीक्षा में शरीक



नम्बर तो लाए पर ना रह सके शरीफ।
मम्मी - पापा को हमपर हुआ नाज़
अब तो बबुआ करेगा स्कूल पर राज।
राज हमारा अब न चलेगा
कब तक कोरोना में छलेगा
अब लगता है अच्छे दिन जाएंगे
क्योंकि 'सरकार' अब तो स्कूल खुल जाएंगे।

कभी नेटवर्क तो कभी मोबाइल हुआ बहाना।
सीख गए हम बात बनाना ,

पर नहीं सीखे हम गणित सुलझाना।
घर बैठे, हुए हम परीक्षा में शरीक
नम्बर तो लाए पर ना रह सके शरीफ।
मम्मी - पापा को हमपर हुआ नाज़
अब तो बबुआ करेगा स्कूल पर राज।
राज हमारा अब न चलेगा
कब तक कोरोना में छलेगा
अब लगता है अच्छे दिन जाएंगे
क्योंकि 'सरकार' अब तो स्कूल खुल जाएंगे।

Pandemic and human behaviour

- R. C. Gond
(Principal, K.V. Patratu)

The pandemic of COVID-19 offers an opportunity to transform human behaviour in India. Recently some people in Bihar took to worshipping a goddess named after coronavirus. This is worrying. India must be wary of treading this path. The police running after people with lathis to send them back homes, frequent breaking the lockdown guidelines in containment zones, assaults on the health workers and so on. These incidents are wake up call for us that we need to change our behaviour. The uncertainties of the times that we live in and the challenges of the coronavirus disease are bound to bring about changes in human behaviour. This behaviour often takes on strange hues.

The need of the hour for India is behavioural change at the societal level. It is science and the only science that can beat the virus. This will be difficult but we must discipline ourselves perhaps even change our work culture to overcome the pandemic. Countries across the world used interesting approaches to tackle the virus, providing paths and lessons for India.

The first is Japan. The country declared an emergency once the virus struck. People ascertained the seriousness of the threat and locked themselves down, even without an official diktat. Everyone began using masks and observing social distancing as a rule. As a result of this self-discipline the spread of the infection was limited and the national emergency was withdrawn soon. The Japanese do not blame the system for their problems; they see themselves as a part of the solutions. It is their way of conquering calamities.

Sweden is the other country. Despite harsh criticism, Prime Minister Stefan Lofven was clear that he would not implement a nationwide lockdown. He believed that the battle could not be won by restrictions, but through awareness. Another remarkable part was that he enjoyed considerable public support. Thus, Sweden succeeded in limiting losses to life and the economy.

The situation India faces is different. It has huge density of population. Its very easy to blame government. People who lived in slums cannot maintain social distancing or the hygiene required to protect against the virus. It will be incumbent on all individuals to now realize their small but crucial role in limiting the spread of the coronavirus. In other words,

emulate the behaviour of the people of Japan and Sweden.

Today one thing remains clear- discipline, self-reliance and social responsibility are driving forces in fighting the pandemic. This is India's biggest challenge, and together, we must rise to the occasion to defend the country against the greatest challenge of our time.

Online classes

- U Jayakumar
PGT(English)
KV No.1 Bokaro

It stood there, enveloped in an eerie silence. Its vibrant aura now lost in the onslaught of a pandemic. The pillars that once radiated the brightness of energised minds and extraordinary lives, now bear the silence of rocks and mortar. The place that was once renowned as a temple for learning now stood as a mere structure to gaze upon.

With the outbreak of the COVID pandemic, the sector that is most seriously hit is education. Schools and institutes had to digitalise the entire learning process which was difficult at first as it is when we come out of our comfort zone and start something new; but with time and practice, it helped the teachers and students get better at interacting with technology and help instil tech-savvy traits. Teachers who were dependent on physical means of imparting knowledge are now versatile enough to teach from any corner of the world. Similarly students got an opportunity to learn how to use technology which will always prove helpful in this world that is swiftly inclining towards digitalisation.

However, this transition did not come sans obstructions. The real essence of learning could not be imparted through means of mobile phone and laptops. Education institutes play a major role in building up an individual's character, moral values and discipline. The lack of holistic education is one of the many adversities of online mode of teaching. Online classes are devoid of one basic essential ingredient used to build up a student's

character, which is interactive learning through communication with teachers and fellow students. When students interact with their classmates they develop a sense of positive competition and this competitive nature is what helps them to strive harder and perform better. The absence of opportunities to participate in cultural and sports activities deeply affects a student's physical and intellectual growth.

Apart from these life changing drawbacks, a common problem faced by students is lack of adequate devices to join classes, network issues, proper monitoring and hence the student grows sans these essential components. But however the parents and students have accepted the new change and have tried in their own ways to procure the required devices and packages to meet with these new requirements of online learning. Students have also participated in the various competitions hosted by KVS online. Monitoring and guiding their activities were slightly challenging as correcting the files uploaded by students and sending it back to them was time taking and hectic but everyone persevered to successfully adapt to the new changes in life.

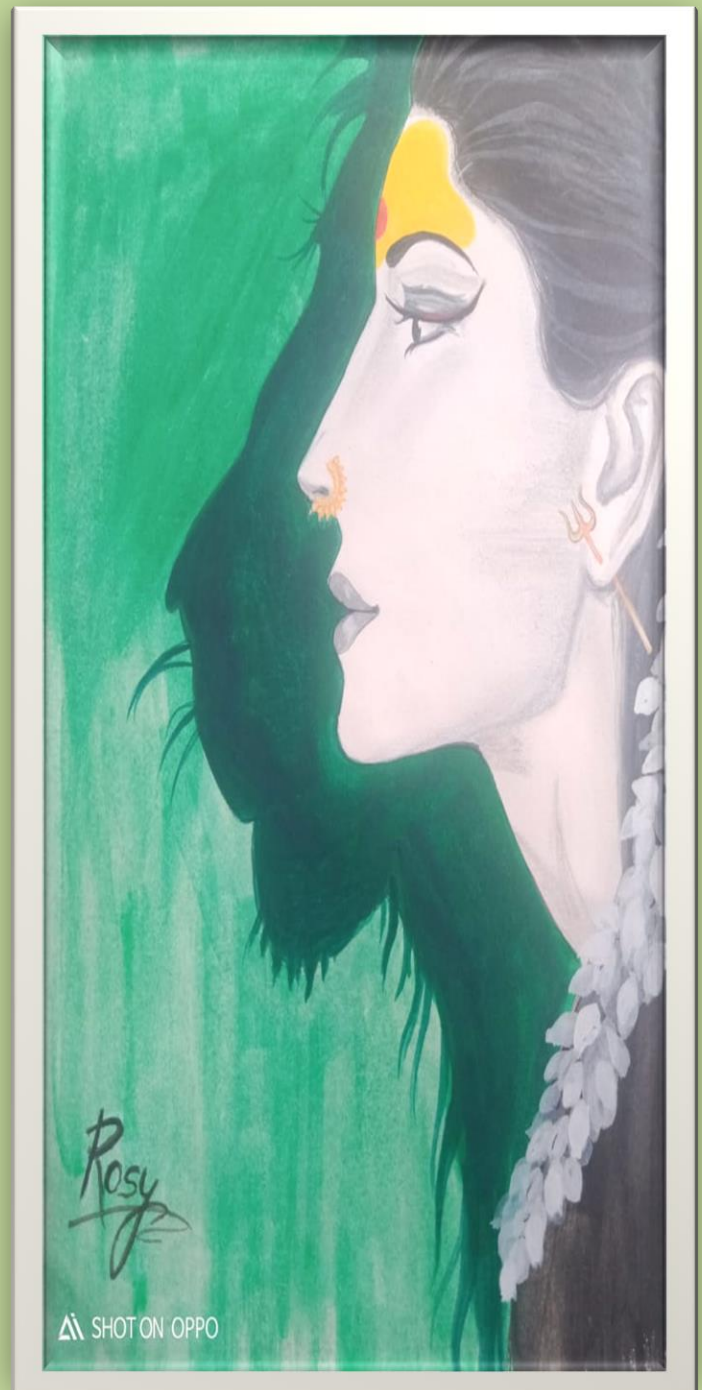
AN ACT OF CHARITY

(A tribute to Health workers)

-Animanand Tigga
PGT, (English)
KV Patratu

A throbbing heart slackens your move
You are scared and apprehended too
Still you coax yourself and shove
Touch the victim who stares at you
Inner anticipation "Lord not me
Please spare me this time."
But the body has turned foe
And I am also on the row
But you have a brave heart
You march forward being stout
You are unrecognizable inside PPE
Yet familiar fathomless hope we see
You are a fearless soldier
A tireless savior
An epitome of charity
In this exigency

I adore your endeavour
You stand tall amid adversity
You resent your comforter
For an Act of Charity.



The Possession

-Atul Kumar Singh , XII A
KV Patratu

I was thinking what was happening with me. I was afraid to go out of my house; I thought it would harm me if I'd go out. I preferred to stay inside but I was feeling suffocated and was having problem in breathing and had a high fever. My friends had the same problem as I was having at that time, they were no more. Now let me take you to a month back.

It was the mid of March, I returned from China from a business trip. I got promotion after that trip and as usual a party was must, so I and my friends decided to have a party at the club. I was not feeling enthusiastic as I used to be; felt like some kind ghost is within me and making me sick, but the show must go on and we had grand celebration. It was quite late, around 2:00 a.m. I returned back home and got to bed but I couldn't sleep. I was feeling uncomfortable as it felt like something was inside my chest and squeezing my lungs, it was so painful but suddenly everything became fine. Finally I fell asleep and woke up next day and got to office, there I came to know about my friends from the last night party were really very sick and some of them were even admitted to the hospital.

I left to see them in the break, they told me that they had severe pain in their chest and they couldn't breathe and ended up there. I was totally freaked out as I had the same symptoms as they had. One of my friends Srijan was so frightened that he decided to go to the occultist (Tantrik) he felt it as some kind of black magic. He left the medical treatment and continued with the occultist. The next day I got the news of the demise of my friends, I was shocked and stunned, the reason for the death was not clear. The another day Srijan met me and said- "Kabir, It is very important for me to tell you the reason behind the deaths, it's a demon who has possessed your body and killing everyone connected to you, next is my turn.....", and he left. I was bewildered, whether I should believe him or not.

The following night I had the same pain and this time it was not only in my chest but I was chocking and had got mild fever. I was thinking

of Srijan and whatever he had said to me. The next day I went to the hospital but I found that there were many such cases. I had to believe Srijan and as I was feeling a ghost overpowering me from the day I had returned from the trip, I thought going once to the occultist would help. So I went there and different rituals were practiced over me to disband the evil spirit.

I tried every single thing that could have helped in this situation but all failed. Doctors reached to conclusion that the reason of the mass deaths was a virus that was spreading by contact, they also said that they had never seen anything like that. They said they didn't have any cure for that, and the death toll will go on. After few days, when it started to occur in several other states and places.

I thought it was a very strong and stubborn demon who was capable to devour the entire world I was frightened. A day later police came to me and they arrested me, they didn't tell me the reason of my detention, they just took me away, the situation was miserable. The reason behind my arrest was the party hosted by me after the trip, as the following day my friends who were in the party had died. I tried to explain them about the demon behind it but they ignored. The same night, I had the same severe pain and choke and I fell into a deep sleep forever. All of my friends had passed away and then the world recognized the cause of the death the virus originated from China.

I think I was the real culprit behind all these, however I had also faced the same consequences that I deserved. Dying is the natural phenomenon and a beginning of a new journey and the entire demonic possession thing was just a myth.

The real demon was the virus which has taken over the world and this is what we call "THE POSSESSION" by the "DEMON CORONA". The only thing that can save us from it is Social Distancing and Hygiene.

2020- A year of new learning

-Avani Mishra, 6 'A'
KV LATEHAR

Covid-19 the pandemic originated in China and rapidly spread to the various parts of the world. It has drastically changed our lifestyle in many ways.

We see many differences in our original lifestyle and post-covid-19 lifestyle. Before covid-19 we wore mask only to protect ourselves from pollution however, after covid-19 we wear mask every time we go out of our homes.

While before covid-19 we used to wash our hand before meals and for hygiene, after covid-19 we wash our hands (often for 20 seconds) to protect ourselves.

Now we stay at home without going outdoors unless for essentials or in case of any emergency. We learn from home virtually by online classes. However, many don't have all facilities like phones, laptops. Internet etc. So such students suffer. Also the need for outdoor sports is extremely important but all of that has come to a halt.

We all should be extremely grateful to the frontline workers-police, doctors, cleaning workers and other helpers.

We are thankful to the police because in covid-19, police handled the situation of law and order. They prohibited people from coming out without any reason.

We are thankful to the doctors and medical staff who toiled hard to save precious lives of corona positive patients by risking their own lives. During this process we also lost many of our warriors. When covid-19 had taken a formidable form in India, the contribution of the cleaning workers of our country played a very important at that time. Due to their contribution and cleanliness, India regulated the spread of covid-19 significantly. Our country has made great progress in the field of research. Covid-19 vaccine made in India is being exported to many countries of the world today.

We have learnt that we must protect Mother Nature and not tamper with it. Now we see less

traffic on roads, less pollution, cleaner environment and happy animals.

In future, We must learn to respect all the living creatures, reduce pollution, plant more trees, ensure cleanliness of our surroundings etc.

--Family is Strength

-Niraj Kumar
TGT (English)
KV

Madhupur
February 8, 2021

Raja Ram was an assistant manager in an

'Lock down due to COVID-19 could have been a golden opportunity to have a great time with family, the best time for dual earner couples to spend time with each other, an opportunity for kids to have a great time with parents, an option to learn new skills, a golden chance to enjoy life, an occasion to cherish with friends online or time to ones hobby like gardening, writing, and drawing.

In Hard times, family is the only support. A man lives for his family. He toils day and night to make them happy. But the Corona Pandemic made Raja Ram realize that he was alone in the world and he needed to redefine his relations and purpose of living. Why is it so...? And what changed his thought ultimately. Let's read this short story.

Electronics Digital store, Chembur, Mumbai (Maharashtra). He had been working there for last three years. The only bread earner in his family, he had gone there in the year 2018 from a small village of Chapra in Deoghar District of Jharkhand. He resided there in a small rented house. Things were going well. One day he heard the news of coronavirus infection and announcement of sudden Lockdown imposed from 24 march 2020 onwards. This had brought a panic wave all over India. There had been travel ban, closure of shops etc. He had to confine himself in his small room. After a week or so, he heard from his Boss that due to COVID -19 protocol, their store was to remain closed till the situation became normal. And hence, his services were no longer solicited.

The news struck him like a thunderous bolt. He had lost his job and was completely helpless. He could n't even go out to seek any other job. No other options seemed available. For almost a month, that seemed to him like an year, he was confined in his house. One day, his landlord asked him for the room rent. It was a really hard time for him. However, he managed to pay his rent from whatever little he had saved. During such times of turbulence family is the first thing we recall for support. Finally, Raja Ram decided to get back to his village as he was missing his family and friends. He was under stress. With little money left, there was no reason to wait in this city. He bought a second hand bicycle for Rs 3000 and took the tough decision to return back to his native place. He had a tough experience on the way back to his hometown. On the way he met many men, women and children travelling barefoot, some on rickshaws, some on scooter, etc. Riding throughout the day and resting only when he got tired, Raja Ram managed things with substantial difficulty. On the way some NGO volunteers and Social Workers were offering food packets and drinking water. Media houses were covering the news of this pitiful plight of workers blaming the mis-management of authorities.

Finally, after a hectic journey of 12 days he reached his home town. His face had gone pale and he had bruises all over his feet. He was badly exhausted. His only hope was a warm welcome by his family members. But when the news of his arrival from Mumbai spread throughout the village, his family members were forced to report to the COVID helpline number. A team of doctors and health workers came to examine him. Despite having no symptoms of covid infection he was sent to the quarantine center for 14 days.

In the quarantine center he saw numerous people like him. There were women and children as well. Raja was experiencing mental torment. Negligence of his family members and his beloved ones instilled in him - depression and sorrow. He thought, "Was he working day and night to see his fate drag him to see such dreadfulness? What about his family!?" There was a time when he was warmly welcomed on his arrival. Was this the same family who hesitated to go near him? He started redefining

his role and importance in his family. The news on increasing domestic violence cases, psychological imbalance, suicides, people losing their jobs, lack of supply of basic needs, people getting stuck at the work locations, travel ban, closure of schools, and loss of lives due to pandemic made him blame himself on failure of entire system.

But Raja Ram was a brave man. He soon realized that negative thoughts and news were leading him into a state of commotion. Stress and restlessness were consuming his health. He needed to hold his nerves and have faith on the Almighty. As an awakened citizen he also needed to sustain trust on the system and try to help and support government in every possible way. He started concentrating on the positive aspects of the Corona Protocol. He began to gradually spend days with positive thoughts, did Yoga and requested people to follow the advisory issued by government i.e. wearing face-mask, maintaining social distancing, washing hands frequently with soap and water along with recurring sanitisation. He convinced people that things were being done for their welfare only. Everything was intended for the greater good.

Finally, those fourteen days elapsed. Raja Ram is a totally transformed man now. He has developed qualities of a good leader during these days. His words are calm and convincing. While coming out of the quarantine center he was happy to see his parents. His father welcomed and embraced him. His Mother said, "Beta don't get us wrong!. We love you very much. But others' life is equally important. Each and every day we were missing you a lot". Being a responsible citizen, it is our duty to follow the protocols issued by the government. Raja said, "You are my strength". Tears of happiness rolled down his eyes...

--

An Evening in the Lockdown

*-Rishu Rani, Class- XII B
KV Patratu*

When the Corona virus was gripping the whole world sneakily everyone had to cop up with the situation. The lockdown was extending again and again. Most of the people had to face a

common question "Will they be able to stand the economic disaster?" Students had to face different question-"What about our result..., class..., friends....?"

Other than these things I had to fight with my loneliness at my own house and this loneliness was my first enemy during these lockdown days. Day by day my enemy was changing his get up. In the first week of lockdown, my mom, dad and my brother were very excited that after a long time we got much time to spend time with each other. But this excitement did not last longer.

In the second week, Day by day my mom was creating nuisance for me. Her attitude became weird. She is a business women, a shopkeeper .She was always busy in her own world of social media. She was tired talking to me and if I tried to initiate a conversation with her, she ignored me. Even my dad tried to find excuse for his negligence towards me. He argued with mom too. One day my patience was lost and in rage I broke my mom's cell phone. She too shivered with anger and beat me red and blue. Suddenly a familiar question haunted in my mind "I'm not her child, I was borrowed from a dustbin." I was desolated and spent most of my time with my brother.

My father too was fed up with our company. He too had turned rude with me. My second set of enemies was his friends. He always went for parties with his childhood friends and many times he broke the rule of lockdown. I felt I was utterly lonely in the crowd. I was just cryin and crying and crying. No one tried to sympathize with me. My mom often taunted me rather nagged me for household core which was my aversion. One day when I was watching TV, my mom came in front of me and said "I wish I Had a good daughter not like this witch." Again I was infuriated. My tears flooded into my eyes. My swift decision was to hang myself. So I went upstairs to the roof rapidly. As soon as I gazed up into the sky a sudden change came over me. I was lost admiring the beauty of the world. I can cherish this wonderful world as long as I am alive. The shadow part of our life makes us to realize how beautiful our bright side is. How stupid I am failing to see the beauty in my parents' admonition.

I found that the moon cannot come every night to shine...but when it comes...it makes the night fascinating...just like the joy that is overwhelming. Actually, everyday cannot be the best but something is better in everyday.

My mom had quietly come after me stroke from behind "Shall I help you to jump down? Oh! Come on! I have prepared your favourite Kheer for you. You know this is how our life is unless you experience bitter you cannot enjoy sweetness. I am your mom and love you sooo much." She hugged me tightly. My grumble had melted. I felt so affectionate. The moon over sky was smiling at me. "I love you too Mom." I mumbled.

--

COVID-19 AND INDIAN ECONOMY

-MR. RAHUL
PGT (ECONOMICS)
KV Patratu

Corona viruses are a family of viruses. In early 2020, after an outbreak in December 2019 in Wuhan ,China - the World Health Organisation identified SARS-COV-2 as a new type of coronavirus. This newly identified type infamously referred to as covid-19, has caused a recent outbreak of respiratory (sinuses, nose, windpipe, throat and lungs) illnesses. The outbreak has spread quickly around the world.

India reported it's first confirmed case of covid-19 infection on 30 January 2020 in the state of Kerala. The affected had a travel history from Wuhan, China. In India - Maharashtra, Delhi, Tamil Nadu, Gujarat housed the top hotspots for the pandemic . According to WHO there are no specific vaccines or treatment for covid-19. However, there are many ongoing clinical trials evaluating potential treatment.

Covid-19 pandemic brutally affected Italy, Spain, USA, UK, Iran, China and rest of the world in the respect of life style, employment, security, necessities, freedom of travel and many more. India is also largely disrupted from corona virus pandemic, whether it is in respect of individual, social and economic or nation's social, economic and political life.

To fight and overcome the covid-19 pandemic Indian government decided to induce nationwide complete lockdown for 21 days from 24 march, 2020 to 14 April, 2020. After completion of the first phase of Lockdown, government induced two more lockdown

periods from 15th April to 3rd May and 4th May to 17th May, 2020. Now, the government of India is planning for lockdown 4.0. All these lockdown periods were announced to save people from COVID-19, but somewhere unnoticed, it affected every individual's life - socially, mentally and economically.

The World Bank and credit rating agencies have downgraded India's growth rate for the fiscal year 2021 with the lowest figures that India has seen in three decades since the 1990's. Indian economy was expected to slump over ₹32,000 crore every day during the first 21 days of complete lockdown. During this period Sensex and Nifty also faced the biggest ever recession in the stock market. COVID-19 also affected the country's business projected up to 53%. Supply chains have been put under stress due to lockdown restrictions. Initially there was a lack of clarity in streamlining "which is an essential commodity and which is not". E-commerce companies faced the problem of low demand because sale of non-essential items in India ceased with the announcement of complete lockdown.

In April, the unemployment rate had increased by nearly 19% within a month, reaching a staggering 26%. More than 45% of houses across the country reported an income drop as compared to last year. Fuel demand in the month of April 2020 fell down steeply by 46% but the sales of LPG rose by 12%. Besides them COVID-19 also affected government tax income, collapsed the tourism industry, hospitality industry, reduced consumer activities, giving rise to the possibilities of recession in demand and so on.

Confederation of Indian Industries (CII) suggested "A plan for economic recovery", which outlined three measures. 1) The government should take steps such as cash transfers to JAM account holders. 2) A Credit protection scheme for MSMEs (Micro, Small and medium enterprises). 3) Creation of special purpose vehicle to limit government exposure while providing adequate liquidity to industry.

Prime Minister Narendra Modi announced a ₹20 lakh crore package, which is about 10% of India's GDP. The main objective behind the

announcement of this package is to make the country self-reliant and revive the stalled economy due to COVID-19. The package will focus on land, labour, liquidity (capital) and laws (entrepreneurship). It will facilitate various sectors including cottage industries, MSMEs, working class, middle class and industries. The Prime Minister emphasized that the package will also empower the poor labourers and migrant workers both in organised and unorganised sector.

COVID-19 is affecting each and every country in the world be it on physiological, economic or social grounds. Go by the proverb, "Precaution is better than cure", follow social distancing, wash your hand regularly, use mask and gloves when go outside.

**STAY HOME STAY SAFE AND STAY HAPPY!
ENJOY QUALITY TIME WITH YOUR Family**



COVID-19

-Amisha Kumari, IX
K.V. Simdega

It is a virus that made the world dead.
We are not playing with friends,
The streets are empty.
We should go to the school to gain knowledge with classmates.
But now we are sitting in our homes.
It is a virus that has deprived us of our rights.
Lives and livelihoods are lost.
It is a virus that if it infects a person,
It weakens his strength.
He would no longer be able to see his family,
Loved ones and friends.

No schools ,no churches ,no meetings .



Everyone is obliged to wear a mask
And respect the prevention tips in order to fight
against the disease.
A virus no one can see, But definitely made us
feel so many things.
The day passes.
I dream that we will get out of the grasp of the
virus.
Let's get ready to fight with disease corona
virus"

Today's Students - Tomorrow's Nation Builders

-Sahdeo Das, PGT (Eng)
KV Madhupur

The backbone of any strong nation is its students. Students who represent the true spirit of a country help the nation in times of emergency, drought, floods or any type of riots. Students by virtue of their energy are best suited for tough jobs for building the foundation of a nation. They can undergo any type of sacrifice. Students possess a fund of immense knowledge which if channelized in proper direction can prove to be of great help and values. Whenever the honour and freedom of a nation is at peril, it is the students who come to the fore front and protect it at the cost of their lives. Students are full of vigour and have

sufficient time to invest in studies. Student life is not a very long one. As such it becomes the duty of students to acquire such information and knowledge as possible during this short period to make the nation strong.

Here I would like to share my bitter experience during global pandemic in the year 2020. Lakhs and lakhs of people lost their valuable lives in the hard times of this covid affliction. In fact, the entire world was devastated and faced a lot of hurdles and pressing problems, it began from China and got spread all over the world. At this time tomorrow's promising students suffered a lot. In this difficult situation the honourable education minister Shri Ramesh Pokhriyal gave valuable suggestions and courage to the students, parents, teachers and principals. According to his precious and valuable suggestions teachers, students, parents and principals implemented that very suggestion in the field of education. Teachers of different subjects kept teaching the students online and we teachers did not let students face any problem in their studies. At the same time it has been seen that many students could not join the google meet classes due to lack of device. In that situation question answers were sent to them through WhatsApp group so that they can complete and continue their studies.

Virtually it was a big challenge for all of us during global pandemic. Some teachers of Jharkhand had hung black board on the wall in a certain village and students were taught. Teachers came forward and discharged their sanctimonious duties. Most of the teachers showed their excellent and stellar Performance in the COVID-19 by taking a great risk of their life.

Corona virus would be a red letter day in the world history, it is a great natural disaster which nobody can forget ever in one's life. COVID-19 made us learn how to live and what to do for our survival day to day. There is balance in atmosphere and pollution got reduced that is good for all human beings. It is our country where vaccine was invented first in the world that is very fruitful and beneficial for the patients who become victim to COVID-19. India is emerging a new India under the well leadership of honourable Prime Minister Shree Narendra Damodar Das Modi. Corona Virus was defeated in India due to well monitoring by PM.

It is said that whenever and wherever there is a decline in religious practice and predominate

arise of irreligion at that time almighty descends in such a way to deliver pious and to annihilate miscreants as well as to re-establish the Principles of religion. Almighty appears millennium after millennium to control over population, corruption, dishonesty and all that.

With the help of Education Minister, Commissioner, Additional Commissioner, Deputy Commissioner, Assistant Commissioner and Principals from various Vidyalayas and schools, the teachers did not let the students feel segregated during global pandemic. In that context I would like to say that east or west, India is the best.

Quiet and calm

-Antrayami Kumar,
TGT English
K.V. Barkakana

All-around quiet and calm
Everywhere choked and jam
There is only dullness and boring
Only chirping but not roaring
Each and every street
Where we used to meet
Every wide or narrow lane
Where we shared pleasure and pain
The school and college, promoting knowledge
Every nook and corner, where the worker along
with the yawner
Used to laugh and glee, sipping their cup of tea
Now nobody is seen, except a dirty dustbin.
Only, lonely, deserted, vacant and void..
A kind heart urges to be the real steroid. .

The Challenges faced and their solution

-Rajni Kumari Verma
TGT (Bio), KV Madhupur

During the online sessions it was very difficult to teach all students of the class at a time, very few joined and many remained absent. Telephonically the absentee students were called, and I talked to their parents but some of them informed that they have only one phone, which they took to the office. Up to some extent this challenge was resolved by staggering the timings of different classes or by taking classes in evening but not satisfactorily. It was difficult to make the concept clear without (black) board work. I utilized screen presentation, Power point presentation, video making etc. for better understanding.

One advantage of this pandemic is that it gave us chance to develop new skills / hobbies such as –

I was very weak in Computer and Technological aids, but during this period I got a chance to hone my skills to a great extent to operate and prepare videos, powerpoint presentation, podcasts, question papers etc. all by myself. The challenge in the daily schedule. During this pandemic challenges were felt in the daily schedule, as due to lock-down, I had to stay at home. Being a mother, wife and daughter-in-law I had to engage myself in household work timely and simultaneously manage my online classes , visiting school as and when instructions were circulated from Principal for any work . It seemed quite difficult to manage all these duties during a busy morning time where I could see everyone else in the family having a good leisure, leaving myself in hurry to complete all my duties in time. So I used to wake up earlier than usual in the morning, perform household works and then take classes.

This pandemic has made us somewhat strong, more efficient, spiking our adaptive capacities so as to enable us to face such difficulties tactfully. This pandemic provided us with the opportunity and time to spend more time with our family and kids. Family relations have grown stronger and joyful. Each and every family member, friend remained well connected and concerned about each other's wellbeing. But it was quite a painful experience to see many people lose their lives, jobs and homes .

Zeal to Serve Humanity Amid the Pandemic

-RAJIV RANJAN
PGT HINDI,KV MAITHON DAM

It is said that extraordinary circumstances give us opportunities to act in extraordinary ways. When the Corona pandemic became a cause of global concern, it also brought to me an opportunity to serve humanity. My story begins with an incident in which some boys of Ambedkar Club located in Das Tola of Sugiyadih, Dhanbad noticed a group of tribal families living in their locality taking away the rice water from their homes for survival during the lockdown. The incident moved them so much that they, along with some other boys of the locality, thought of preparing food by themselves and feeding the needy people in the

vicinity of their homes. Though they had good intentions, the work was not easy. They had quite a few obstacles in front of them as the boys themselves belonged to BPL families. None of them had enough money to spare for charity. Yet they decided to involve all the members of the community to empower their mission. Inspired by the selflessly philanthropic intentions of the less privileged, I decided to actively join their cause as I felt monetary contribution alone cannot absolve me of my duties towards the deprived.



Starting from the initial fifty, the group went on to feed more than five hundred people daily throughout the months of lockdown while following all the COVID guidelines issued by Government of India. Each day began with the club members collecting firewood from nearby areas, preparing food, then distributing it from the club as well as some others points where needy people started gathering. After completing the work of distribution, the members gathered in the evening to hold a meeting in relation to what was to be made the next day and how the food would be arranged. This meeting was very important as the members had to do everything with their extremely limited resources.



With the intention to become an integral part of part this noble mission, I joined those boys. We

made a team of fifty people who first collected the raw materials from their own homes to prepare the first meal in the club itself and distributed it from there. As the process began, these young people went out to shopkeepers and well-to-do families to ask for donations to keep the drive alive and help it flourish. Apart from personally contributing to the required funds, I approached many individuals, institutions and associations that I had ever been associated with to donate generously for the poor and helpless. I used various social media platforms to give wide publicity to this endeavour and was heartened to see an overwhelming response from people. Inspired by their spirit, some institutions of the city like Roti Bank, AYUSH Foundation and Shri Ram Chandra Mission provided food grains to them so as to enable these young men continue their work enthusiastically.

I do not know if by supporting them I did anything outstanding. I just wanted to be able to show my face to the people of my city after the lockdown ended. Women like Budhni, a woman who walked 5 kms daily to get food for her family, would have died of hunger but for the helping hand extended by the Ambedkar Club members. Their desire to support hundreds of people who were rendered jobless during the lockdown roused me from my grateful and happy bubble of being able to keep my family safe and comfortable during the lockdown. I was inspired by the zeal of the Ambedkar club members, and I hope more people like me find motivation from this story to get associated with such causes and work at the ground level. The sense of fulfilment that I experienced at the end of each of those days is beyond comparison.

This was the biggest reward that I could ever hope to receive in my life.



Life During Lockdown

-Fatima Zohra,
Class – VII , K.V.Simdega

I learnt many things from this lockdown
Like following rules and helping others,
Using sanitizer and mask, and many more.
And after this lockdown I am feeling happy that
life is getting normal. Everyone is back to there
work.

I feel free when I can go in and out.
Although i am also missing it because
I spent a lot time with my family.
I learnt many things from them in this
lockdown.

Now I feel bored in home so I want schools to
be open.

That I can play with my friends And enjoy in
the school.

Now I want that this corona virus to get
finished.

I want to be back in life.

I'm a teacher

-Mr. PAWAR JAI LAL SHIVDAS,
(PRT), K. V. SIMDEGA

I'm a teacher, I love my kids.

I help them bloom
and don't just sow seeds.

Don't you love us too? we know you do, O Lord.

Then why is such malady, why this grief?

Are you not afraid of the consequences?

or it's a punishment to your kid's mischief?

I am just a teacher O Lord,

Oh, I'm sorry, I am not even that when my
students aren't around.

Oh, online teaching?

Stubborn me, I still want them around.

The plants need some sunlight now, please
swipe the mound.

Are you not scared of how buds stop budding?
or you are preparing your kids for unpredictable
calamities?

I am a teacher,

Well sanitized, hygienic smartphone I am with,

I eat healthy and have fresh air to breath,

Yet, I am deficient of vitamin kids.

It's really difficult to play kho-kho with weeds.

Are you not worried of how lazy the caged-
birds are going to be?

Or you just want them learn a lesson?

Yes, I am a teacher,

I get to see classrooms everyday,

'Pin drop silence', I now don't need to say,

I'm being teased by 'no complaint',

These dumb benches are not as naughty as my
kids,

I'm so grieved at my school's loneliness
and on sacrificing my classroom's loveliness,
Are you not mourning for the loss we gained?
or you wanna make us understand -this is how
the life is?

Will you please bring my kids back to school?
See, how the nature with it's returned beauty
looks cool.

O creator, on your planet a creature is being
allergic to creature,

Let everything be normal, let us teach our kids
how that should be nurtured,

Are you not sympathetic by nature O Lord? or
you want us learn how to be sympathetic with
nature?

Let us know O Lord, we are still in a fix.

WRITE UP ON COVID-19

-BY MUKESH KUMAR

PGT ENGLISH, KV BARKAKANA

The unwelcome apocalypse (the sudden sinking feeling)

It was during lockdown one, when this feeling
started to get on to our nerver. My daughter
who actually is the movie buff had surprisingly
started having deep sinking feeling after
lockdown one.

She had actually seen a movie "Contagion"
based on the theme of pandemic proportion of
similar kind which told about the spread of this
sort of total destructive infection of deadly
virus.

Moreover, it was never before has given by the
children or most of us that everything in the
world can certainly, come to a screeching halt
and we will mere remain prisoners within our
own homes, No schools, no college, no office,
no market, even stepping out it is going to be
deadly. Life! Ah! it was gone! We all had started
to have a 'sinking feeling' my daughter who had
watched the film 'contagion' on an OTT
platform had more sinister nightmarish
thoughts naturally.

It was not only awkward but also totally
unexpected the through "annihilation" of every
next morning by a few thousand and lakhs,
myself checking the covid Tally for Corona
metre go up every next morning and all in the
family being aware for it the news channel

screaming and delivering havoc right inside the living rooms which state as a frightening wide all the time and next morning the void got deeper and more scary with no rescue or remedy in sight.

It was really puzzling and unabashedly for all especially the children who couldn't fathom anything of this sort coming. The social distancing, washing of hands etc. made them more panicky.

The ordeal and the way that emerged... (float... float and float some more)

It was after Lockdown one, during lockdown two, that the extent of the future duration of this pandemic was gauged and then seeing no other alternative it was tried to implement online mode of learning as they say intended this and what sort of relief was it the children who used to join "Zoom" classes in the beginning was so sincere and sensitive. As a teacher it was so exhilarating make everyone come online, read, discuss even show things to them on the "white board" as if someone is presenting on a nice blackboard and the children just started learning by default.

There were so many hiccups to it through, but the teacher-student involvement and the effective coordination by the parents, school etc. took care of the glitches as the days progressed and by December most teacher and students of classes learnt online almost nicely. It was maybe the pandemic of the millennium. So dreadful but then "human Endeavour" can't be decimated. The effort just was going to prove it. The coping mechanism that followed.

The takeaway (learning.... from Life... be prepared)

The Eerie covid-19 pandemic period had crushed the backbone of the most development all goals.

The world war smooth sailing into.... It has shrunk the world's economy by a hard hitting all time low and eaten up the GDP's of the nation. Making excessive expenditure on Healthcare and life-saving measure which made us all poor and it robbed the world.

But along with it, it had shown us how things can be. When they take an ugly turn and in future too.

We should be more prepared and rejuvenate our resources to a sustainable level. It taught us how to use digital mediums efficiently to combat apocalyptic situation and enhance such



measure to have a way through the tough and gloomy passage of time.

Humans never, ever give up then, they sail through.....

Lord is merciful. Before any total extinction the second coming is at hand always.

Amen

MY EXPERIENCE DURING COVID-19 PANDEMIC

- Niraj Kumar (TGT, English)
KV Madhupur

The outbreak of the deadly coronavirus which originated in Wuhan, China has spread all over the world. Hundreds of thousands of people have been infected and thousands of people have died. The spread of coronavirus was declared a pandemic by the World Health Organization. India being the second most populated country in the world, took drastic measures to prevent its spread – India was set under a 21-day complete lockdown on 24th march 2020. Travel bans were imposed, school were closed along with colleges and shops. It posed as a challenge not only in terms of physical well-being but also mental well-being for students, parents and teachers.

The Lockdown period due to covid- 19 has totally changed the entire scenario of teaching and learning.

Generally, there were two major problems. First one - there was panic in the society and the other was a sense of job insecurity amongst parents. On one side, health workers were playing their role and on the other we teachers had to find ways and means to reach students

and parents to know about their mental wellbeing and academic progress. So, we had to shift to online and digital platforms to reach students. Although I was not trained about these platforms, I learnt with the help of the Principal, colleagues and self-efforts made by using You- Tube, National Digital Library, resources available on NCERT- CIET website and by attending various webinars / workshops. I began using Google classroom, Google meet, Zoom, Google forms, Quizizz.com, Kahoot etc. I attended various webinars that helped me to learn how to conduct online classes in an effective way.

Being confined at home, reading news related to Corona and no physical activity sometimes made me physically and mentally sick. But I tried changing my life style. I started taking a morning walk and rope skipping to keep myself physical fit. I started working in school garden for an hour every day. I developed a small plant nursery in front of my residence. All these gave me mental relaxation. I read motivational books by Swami Vivekananda and also developed content for my blog(nirajkumarswami.wordpress.com). I took paid classes from The British Council and 'Hello Shraa' to develop my communication and professional skills. I also completed Competency Based Education modules by CBSE and all the 18 Modules of NISTHA program. I spent time with my family and kids. They gave me moral support.

Being a human being and the stakeholder of the 'Awakened citizen Programme', I cannot refuse my social responsibility. Some of the parents of my class who had lost their jobs due to lockdown were unable to pay the school fee of their children. When I came to know that the reason was genuine, I paid fees of two students (S....b....l & O...u) and requested some of my colleagues to support the needy parents. They appreciated the idea and came forward to help. I recharged mobile of a worker (Bhola) who used to work for us. One day he came to my residence looking for work as he had been jobless for a month. I gave him five-days work during lockdown to remove dried grass and bushes in my surroundings. I followed COVID – 19 Protocol and avoided frequent visits to market. I helped my neighbours by bringing required things for them whenever I went outside.

I also worked for marginalized students who had limited or no access to mobile phone and text books. I used to call five students of my class on rotation basis to know about their well-being and academic progress. I went to residence of a digitally marginalized child (R..... P..... of class X) a Gujarati immigrant to Madhupur, to enquire about his mental well-being and reason for not joining online classes. I provided him text books and purchased a few reference books for him. I was unable to contact one of the students of class IX (of which I am the Class Teacher), namely A..... K..... of class IX as his contact number present in school record was out of reach. I with the help of my colleague Shri Rajiv Kumar Singh (PGT) went to look for him at his address. We came to know that he had gone to his village. There I met another student Abhay who told that his neighbour lived in the same village. He gave his neighbour's contact number and with the help of Abhay's neighbour I could contact my student.

This lockdown due to COVID Pandemic has taught us great lesson of health and hygiene. Human ambition and rapid progress sometimes may invite disaster to humanity. But whenever problem for entire humanity arises, we come up with concrete solution like COVID vaccine. We came to know importance of family and friends. Humanity hidden in us came alive. Many people came forward to help at their level. We learnt that we must be prepared for future. We together can make world a better place to live.

his neighbour's contact number and with the help of Abhay's neighbour I could contact my student.

This lockdown due to COVID Pandemic has taught us great lesson of health and hygiene. Human ambition and rapid progress sometimes may invite disaster to humanity. But whenever problem for entire humanity arises, we come up with concrete solution like COVID vaccine. We came to know importance of family and friends. Humanity hidden in us came alive. Many people came forward to help at their level. We learnt that we must be prepared for future. We together can make world a better place to live.

My Experience

-Anshuman Raj ,IX A
KV Pataratu

The month of March along with my final exams were just on the brink of getting over. I was already brimming with colossal plans for my upcoming vacation. But everything got busted because of a small virus - what the WHO announced as the novel 'Coronavirus'. This was followed by the notice served by the Education Ministry of India , stating to cease the running of schools and colleges indefinitely. My misery knew no bounds. No Schools meant no friends and no friends meant no Fun !! The initial days of Lockdown were spent quite enthusiastically, going through a strict regime of nutritious feeding and regular exercise . But days came when even this turned out to be boring. When I was on the verge of losing interest in everything , it was my parents' and teachers' advice that ringed through my ears. "It can be boring sometimes, but it's through repetition that you create habits .. good habits !!" This struck a chord within me, reviving my vigour to do something fruitful. I was determined , not to lose track . I got myself involved in exploring various fields about which little was known to me earlier - Astronomy, Sports, Current Affairs , Cooking and a lot more ! Eventually our Online Classes attained stability and learning was back on track . I was committed to overcome this pandemic with substantial success. My endeavour is persistent and I hope the same for the global world we all share . Together, we will fight against this vicious virus and emerge victorious with flying colours. God is with us , always !

Me being prepared for 2020:



2020:



A relatable life of us during covid-19 outbreak

-By Vishishta and Garima
KV Latehar

As we all know few months ago our life literally stopped, not entirely but still we were all like repeating a day again and again the cycle was unstoppable. we all tried our best to learn and get through with this like a vacation but as we know that things doesn't always happen as we plan, the lockdown extended.

Online classes and studies made us mad seeing parents work from home was not better too. Mental depression, crying over little things not meeting friends it was all of an emotional rollercoaster. Those days were all up and down giving happiness, sadness and a bunch of unexpected new experiences. But eventually we started to get used of it, and for all the things people fighting from coronavirus was more important.

And on the positive note these are the things we learnt from the lockdown during this pandemic:-

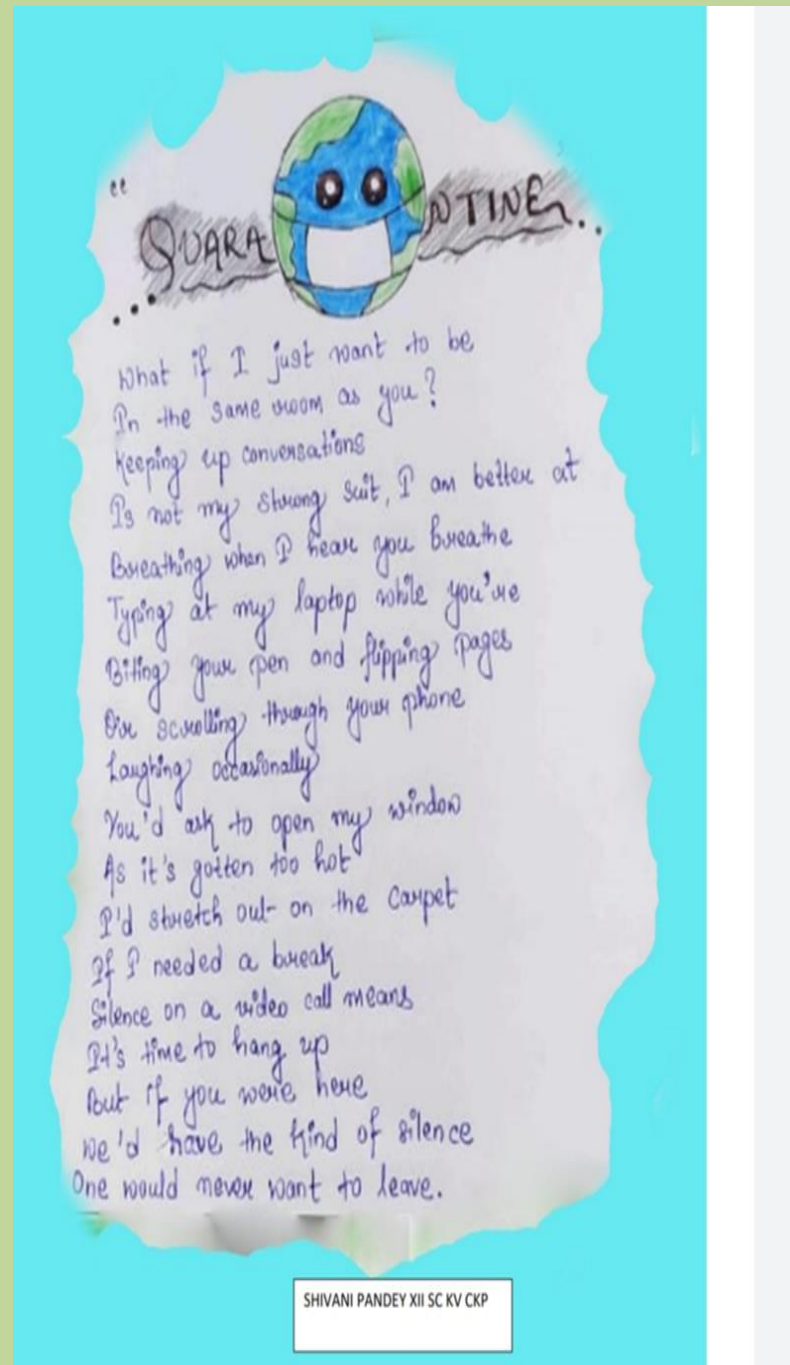
We used to get tired of our daily routine before the corona knocked in India. Due to this, we didn't wake up early in morning but in that lockdown, we became punctual and starting waking up early in the morning.

When everything was normal, there were such things that we didn't give importance to and we took those things for 'taken for granted' . But when lockdown happened we learnt to give importance to those things.

Among us, there are many people who don't have enough time to follow their hobbies, but in that lockdown when everybody was free, they started to follow their hobbies that they wanted to do for a long period of time.

Lockdown has given us the most important thing to spend time with our family.

Corona has completely changed the life of people. Many of us got a positive effect by this pandemic. It has taught us how can we live our life slowly and peacefully. And at the end we will like to say that as we see the changes people wearing mask follow social distancing, it is really tough to get used to changes but at the end it is for our own good so let's not be so afraid of changes.



ANISH KUNDU - XI SC KV CXP

*Me during
Online classes



When you are sure that you
will fail but got promoted
due to the panedemicc







इस पत्रिका में शामिल सारे विचार लेखको के हैं इसके लिए
केन्द्रीय विद्यालय राँची संभाग जिम्मेदार नहीं है.